मौत
की याद
मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

# मौत की याद

लेखक
**मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान**

अनुवाद
**तनवीर अहमद**

संपादक
**मोहम्मद आरिफ़**

# विषय-सूची

# दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक मौत और जीवन के विषय पर आधारित है यानी इस विषय पर कि इंसान के जन्म का उद्देश्य क्या है और मौत के बाद जब वह जीवन के अगले चरण में प्रवेश करता है तो उसके साथ क्या होने वाला है। यह विषय क़ुरआन का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। यह कहना सही होगा कि इंसान के रचयिता ने क़ुरआन इसलिए उतारा, ताकि इंसान जीवन के उद्देश्य को जाने और उसके अनुसार अपने जीवन की सही योजना बनाए।

हर औरत और हर आदमी का यह मामला है कि वह एक दिन माँ के पेट से पैदा होकर संसार में प्रवेश करता है और सौ वर्ष से कम अवधि तक जीवन व्यतीत कर अगले जीवनकाल (lifespan) की ओर चला जाता है। क़ुरआन में इस प्रश्न का बहुत ही स्पष्ट उत्तर मिलता है। हर औरत और हर आदमी का यह पहला काम है कि वह इस प्रश्न का प्रामाणिक उत्तर ज्ञात करे, ताकि वह इसके अनुसार जीवन बिताकर अपने स्थायी (eternal) जीवनकाल में सफलता का दर्जा प्राप्त करे।

प्रस्तुत पुस्तक दावती[1] साहित्य में एक वृद्धि की हैसियत रखती है। इसी के साथ वह तज़किये[2] के विषय पर भी एक महत्वपूर्ण पुस्तक की हैसियत रखती है। एक दृष्टि से यह पुस्तक एक दावती पुस्तक भी है और दूसरी दृष्टि से वह आत्मनिरीक्षण (self-introspection) का माध्यम भी।

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान, नई दिल्ली
20 अगस्त, 2016

---

[1] ईश्वर के संदेश को लोगों तक पहुँचाना।

[2] आत्मा का शुद्धिकरण।

# सोचिए, सोचिए, सोचिए

इंसान को पैदा करके इस धरती पर आबाद करना इनाम के रूप में नहीं है, बल्कि वह परीक्षा के रूप में है।

अगर पहाड़ की गुफा से किसी दिन एक जीवित इंसान निकल आए तो सारे देखने और जानने वाले लोग उसको आश्चर्यजनक घटना समझेंगे। सारे लोग यह सोचने लगेंगे कि ऐसा क्योंकर हुआ। माँ के पेट से एक इंसान का पैदा होना भी इसी तरह की एक घटना है, जो भयानक सीमा तक विचित्र है। लोग माँ के पेट से जीवित इंसान को पैदा होते हुए देखते हैं, लेकिन वे उसके बारे में कुछ नहीं सोचते।

यह अंतर क्यों है? इसका कारण यह है कि माँ के पेट से इंसान का पैदा होना प्रतिदिन की एक घटना है। बार-बार देखने के कारण लोग इस घटना के आदी हो गए हैं, इसलिए वे इसको फॉर ग्रांटेड (for granted) लिये रहते हैं। वे इस मामले में सोचने की ज़रूरत नहीं समझते। लोग अगर इस मामले पर गंभीरता से सोचें तो वे इंसान के जन्म की घटना में रचयिता के अस्तित्व की खोज कर लें। जब वे देखें कि एक जीवित और विवेकपूर्ण इंसान पैदा होकर धरती पर चल-फिर रहा है, वह देखता और सुनता है और बोलता है, तो उनको महसूस हो कि हर इंसान रचयिता के अस्तित्व की एक चलती-फिरती निशानी (sign) है। हर इंसान लोगों को अपने रचयिता का एक जीवित परिचय प्रतीत होने लगे।

इसी तरह इंसान जब पैदा होकर मौजूदा ज़मीन (planet earth) पर आता है, तो वह पाता है कि यहाँ उसके लिए एक पूरा जीवन सहायक प्रणाली (life support system) मौजूद है। यह जीवन सहायक प्रणाली इतनी परिपूर्ण (perfect) है कि कोई मूल्य दिए बिना वह इंसान की हर छोटी और बड़ी ज़रूरत को बहुत ही श्रेष्ठ रूप में पूरा कर रहा है। ज़मीन से लेकर आसमान तक सारा संसार असाधारण रूप से इंसान की सेवा में लगा हुआ है।

उसके बाद वह दिन आता है, जबकि इंसान अचानक मर जाता है। इंसान अपने स्वभाव के अनुसार हमेशा ज़िंदा रहना चाहता है, लेकिन सौ साल के अंदर ही यह घटना घटती है कि हर औरत और आदमी अपनी इच्छा के ख़िलाफ़ इस संसार को हमेशा के लिए छोड़कर चले जाते हैं।

धरती पर पैदा होने वाला हर इंसान दो चीज़ों का अनुभव करता है। पहले जीवन का अनुभव, उसके बाद मौत का अनुभव। अगर इंसान गंभीरता से इन घटनाओं पर सोचे तो वह निश्चित रूप से एक बहुत बड़ी हक़ीक़त को खोज लेगा, वह यह कि इंसान को पैदा करके इस धरती पर आबाद करना इनाम के रूप में नहीं है, बल्कि वह परीक्षा (test) के रूप में है।

वर्तमान संसार में इंसान अपने आपको आज़ाद महसूस करता है। यह आज़ादी इसलिए है, ताकि यह पता किया जाए कि कौन-सा व्यक्ति अपनी आज़ादी का सही इस्तेमाल करता है और कौन-सा व्यक्ति अपनी आज़ादी का ग़लत इस्तेमाल करता है। कौन-सा व्यक्ति अनुशासित जीवन व्यतीत करता है और कौन-सा व्यक्ति अनुशासित जीवन का तरीक़ा नहीं अपनाता।

आदमी अगर गंभीरता से सोचे तो वह इस सच्चाई को पा लेगा कि मौत असल में रचयिता के सामने हाज़िरी का दिन है। इंसान अपनी हक़ीक़त की दृष्टि से एक ऐसा जीव है, जिसका कोई अंत नहीं, लेकिन उसके जीवनकाल (lifespan) को दो भागों में बाँट दिया गया है— मौत से पहले का जीवनकाल (pre death period) और मौत के बाद का जीवनकाल। मौत से पहले का जीवनकाल परीक्षा के लिए है और मौत के बाद का जीवनकाल (post death period) उसके पिछले रिकॉर्ड के अनुसार इनाम या सज़ा पाने के लिए।

इंसान आज अपने आपको इस संसार में एक जीवित और विवेकपूर्ण अस्तित्व के रूप में पाता है। यह जीवित और विवेकपूर्ण अस्तित्व एक स्थायी (eternal) अस्तित्व है। मौत वह दिन है, जबकि यह जीवित और विवेकपूर्ण अस्तित्व अपने इसी वर्तमान रूप में अस्थायी (temporary)

संसार से निकाला जाता है और उसको इसी जीवित और विवेकपूर्ण अस्तित्व की स्थिति में अगले स्थायी संसार की ओर भेज दिया जाता है।

यह पल हर औरत और हर आदमी पर अनिवार्य रूप से आने वाला है। वह अनुमान से परे गंभीर पल होगा। मौत के बाद आने वाले इस जीवनकाल में यही वर्तमान इंसान होगा, लेकिन उसके सारे संसाधन उससे हमेशा के लिए छूट चुके होंगे। उसके पीछे वह संसार होगा, जो उससे हमेशा के लिए छूट गया और उसके आगे वह संसार होगा, जहाँ उसको पूरी तरह से बिना साधन के हमेशा के लिए रहना है। समझदार वह है, जो इस आने वाले दिन के लिए अपने आपको तैयार करे।

## इंसान की कहानी

मौत के बाद के जीवन में जो चीज़ काम आने वाली है,
वह बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास है।

जीव-जंतुओं के लिए जीवन केवल एक बार है, लेकिन इंसान के लिए असाधारण रूप से जीवन दो बार होता है। हर इंसान मूल रूप से अनंत जीवन का मालिक है। इस अनंत जीवन का बहुत छोटा-सा भाग मौत से पहले के जीवनकाल में है और इसका शेष पूरा भाग मौत के बाद के जीवनकाल में।

कायनात की दूसरी चीज़ें प्रकृति के नियमों के अधीन हैं। यहाँ की हर चीज़ मजबूरन वही करती है, जो उसके लिए प्रकृति के नियम के अंतर्गत पहले से निश्चित कर दिया गया है, लेकिन इंसान का मामला इससे अलग है। इंसान असाधारण रूप से एक आज़ाद प्राणी है और वह अपना भविष्य स्वयं अपने आज़ाद इरादे के अंतर्गत बनाता है। वह अपनी आज़ादी का या तो सही इस्तेमाल करता है या ग़लत इस्तेमाल। वह अपने अवसरों को या तो पाता है या उसको नादानी के कारण खो देता है।

इस सच्चाई को क़ुरआन में अलग-अलग ढंग से बताया गया है। क़ुरआन की सूरह नंबर 95 में ईश्वर ने यह घोषणा की है— “हमने इंसान को बेहतरीन बनावट के साथ पैदा किया। फिर उसको सबसे निम्न श्रेणी में फेंक दिया।” (अत-तीन, 4-5)

‘We created man in the best mould, then We
cast him down to the lowest of the low.’

यह मानो इंसान के लिए एक चेतावनी है, जो उसे उसके वर्तमान और उसके भविष्य के बारे में सोचने के लिए निमंत्रण देती है। इसका अर्थ यह है कि ईश्वर ने इंसान को श्रेष्ठ संभावनाओं (potential) के साथ पैदा किया, लेकिन इंसान अपनी संभावनाओं का न्यूनतम इस्तेमाल करके अपने आपको सबसे बुरी असफलता में डाल देता है।

God created man with great potential, but by underutilizing
his potential, he makes himself a worst case of failure.

इंसान का व्यक्तित्व एक दोहरा व्यक्तित्व है— शरीर और आत्मा (मन)। विज्ञान के अध्ययन से पता चलता है कि दोनों का मामला एक-दूसरे से बिल्कुल अलग है। जहाँ तक इंसान के शरीर का संबंध है, वह अस्थायी है। जबकि इंसान की आत्मा एक स्थायी अस्तित्व की हैसियत रखती है। इंसान की आत्मा एक अभौतिक (immaterial) सच्चाई है। वह भौतिक नियमों से परे है, जबकि इंसान का शरीर भौतिक नियमों के अधीन है और निरंतर रूप से नाशवान है।

जीव-विज्ञान संबंधी अध्ययन बताता कि इंसान का शरीर बहुत छोटी-छोटी कोशिकाओं (cells) से बना है। ये कोशिकाएँ हर पल हज़ारों की संख्या में टूटती और ख़त्म होती रहती हैं। इंसान का पाचन तंत्र (digestive system) मानो कोशिकाओं को बनाने वाली एक फैक्ट्री है। यह फैक्ट्री लगातार कोशिकाओं की सप्लाई करती रहती है। इस तरह शरीर अपने अस्तित्व को बनाए रखता है। यह काम इस तरह होता है कि हर कुछ वर्ष के

बाद आदमी का शरीर बिल्कुल एक नया शरीर बन जाता है, लेकिन उसका आध्यात्मिक अस्तित्व किसी बदलाव के बिना उसी तरह बना रहता है। इसलिए कहा गया है कि इंसान का व्यक्तित्व परिवर्तन के बीच अपरिवर्तनीय रहने का नाम है—

‘Personality is changelessness in change’

इंसान की नाकामी का पहला उदाहरण यह है कि वह अपने व्यक्तित्व के स्थायी भाग की अनदेखी करता है और अपने व्यक्तित्व के परिवर्तनशील भाग को अच्छा बनाने में लगा रहता है। वह अपना सारा ध्यान नश्वर (mortal) इंसान के सुधार में लगा देता है और अनश्वर (immortal) इंसान के सुधार के लिए वह न कुछ सोचता है और न कुछ करता है। इसका परिणाम यह होता है कि एक सीमित समय बिताकर जब वह मरता है तो उसकी स्थिति यह होती है कि उसका नश्वर अस्तित्व अपनी सभी दिखावटी उन्नतियों के साथ हमेशा के लिए मिट जाता है और उसका अनश्वर अस्तित्व अविकसित स्थिति में मौत के बाद के जीवनकाल में प्रविष्ट हो जाता है।

यही वह घटना है, जिसको क़ुरआन में इंसान की नाकामी कहा गया है। यह निश्चित रूप से सबसे बुरी नाकामी है कि इंसान उच्च क्षमताओं (potential) के साथ पैदा किया जाए, लेकिन वह अपनी क्षमताओं का कमतर इस्तेमाल करे और उसके बाद वह हमेशा के लिए अपने इस कमतर इस्तेमाल का मूल्य देने के लिए अपने स्थायी जीवनकाल में प्रविष्ट हो जाए।

इसी तरह अध्ययन बताता है कि इंसान असाधारण रूप से सोचने की योग्यता रखता है। सोच-विचार (conceptual thought) की योग्यता इंसान का एक ऐसा गुण है, जो विशाल कायनात की किसी भी चीज़ में नहीं पाया जाता। यहाँ तक कि जीव-जंतुओं में भी नहीं। इसलिए कहा गया है कि इंसान एक सोचने वाला जीव है—

‘Man is a thinking animal.’

इस दृष्टि से देखें तो इंसान का व्यक्तित्व दो चीज़ों से मिलकर बना है—

सोच-विचार न करने वाला शरीर और सोच-विचार करने वाली आत्मा। जो लोग अपनी क्षमताओं का इस्तेमाल सीमित स्तर पर केवल अपने संसार के लिए करें, वे मानो अपने अस्तित्व के सोच-विचार न करने वाले भाग की तो ख़ूब सजावट कर रहे हैं, लेकिन अपने अस्तित्व के सोच-विचार करने वाले भाग की उन्नति के लिए वे कुछ नहीं करते। दूसरे शब्दों में यह कि वे मौत से पहले का अपना सारा जीवन शारीरिक विकास (physical development) में लगा देते हैं और जहाँ तक मानसिक विकास (intellectual development) की बात है, वे इसके लिए कुछ नहीं करते। ऐसे लोगों की जब मौत होती है तो उनकी स्थिति यह होती है कि वे उसी तरह मर जाते हैं, जिस तरह कोई जानवर मरता है यानी अपने शरीर को ख़ूब मोटा बनाना और अगले जीवनकाल में इस तरह प्रवेश करना कि उनका मन-मस्तिष्क संपूर्ण विकास से वंचित हो और अगले जीवनकाल में ज़्यादा पछतावे के सिवा कुछ और उनके हिस्से में न आए।

इस तरह एक अध्ययन बताता है कि इंसान के अंदर असाधारण रूप से कल (tomorrow) की कल्पना पाई जाती है। इस कायनात की सभी चीज़ें, जीव-जंतु सहित, केवल अपने आज (today) में जीते हैं। यह केवल इंसान है, जो कल की समझ रखता है और कल को लक्ष्य बनाकर अपने जीवन की योजनाएँ बनाता है मानो शेष सभी चीज़ें केवल वर्तमान में जीती हैं और इंसान असाधारण रूप से भविष्य में।

क़ुरआन के वर्णन के अनुसार, वे लोग सबसे ज़्यादा घाटे का शिकार हैं, जो अपनी क्षमताओं को केवल आज की चीज़ों को प्राप्त करने में लगा दें और अपने कल के निर्माण के लिए वे कुछ न करें। ऐसे लोग मौत से पहले के जीवन में देखने पर सुखी दिखाई दे सकते हैं, लेकिन मौत के बाद के जीवन में वे हानि उठाने वाला सबसे बुरा उदाहरण बन जाएँगे, क्योंकि मौत के बाद के जीवन में जो चीज़ काम आने वाली है, वह बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास (intellectual and spiritual development) है, न कि

सांसारिक अर्थ की दृष्टि से भौतिक विकास (material progress)।

इस तरह अध्ययन बताता है कि हर इंसान अपने अंदर अंतहीन इच्छाएँ रखता है। इसी के साथ हर इंसान के अंदर असीमित क्षमताएँ पाई जाती हैं, जिनका इस्तेमाल करके वह अंतहीन सीमा तक अपनी इच्छाओं को पूरा करे, लेकिन हर इंसान का यह परिणाम होता है कि वह अपनी क्षमताओं का केवल इतना इस्तेमाल कर पाता है, जो उसे मौत से पहले के सीमित संसार में कुछ सामयिक राहत दे सके, लेकिन आख़िरकार हर इंसान का परिणाम यह होता है कि वह अपनी इन सभी क्षमताओं को लिये हुए मौत के बाद के स्थायी संसार में प्रविष्ट हो जाता है, जहाँ वह हमेशा के लिए कष्टों से भरा जीवन व्यतीत करे, क्योंकि उसने इस दूसरे जीवनकाल के लिए अपनी क्षमताओं का इस्तेमाल ही नहीं किया था।

ऐसी स्थिति में इंसान के लिए वास्तविक तरीक़ा यह है कि वह अपने जीवन की योजना इस तरह बनाए कि उसकी प्राकृतिक क्षमताएँ भरपूर रूप से उसके अनंत भविष्य के निर्माण में इस्तेमाल हों। वह अपनी क्षमताओं को समझे और उनको इस तरह इस्तेमाल करे कि वह अपने स्थायी जीवनकाल में उनका लाभकारी परिणाम पा सके। वह अपने आपको इस बुरे परिणाम से बचाए कि अंत में उसके पास केवल यह कहने के लिए शेष रहे कि मैं अपनी क्षमताओं का इस्तेमाल करने से वंचित रहा।

‘I was a case of missed opportunities.’

इंसान के लिए हक़ीक़त पर आधारित योजनाबंदी यह है कि वह मौत से पहले के जीवनकाल में भौतिक चीज़ों के मामले में केवल ज़रूरत पर संतोष करे और अपने समय और अपनी क्षमताओं का बड़ा हिस्सा इस पर ख़र्च करे कि वह मौत के बाद के जीवन में एक विशुद्ध व्यक्तित्व (purified personality) के साथ प्रवेश करे, ताकि उसको स्थायी जीवनकाल के आदर्श संसार (perfect world) में सम्मान और राहतपूर्ण जीवन मिल सके।

अध्ययन बताता है कि मौत से पहले के जीवनकाल और मौत के बाद

के जीवनकाल, दोनों में सफलता का नियम केवल एक है और वह है अपने आपको तैयार व्यक्तित्व बनाना। सांसारिक अर्थों में तैयार व्यक्तित्व मौत से पहले के जीवनकाल में उन्नति का माध्यम बनता है और आध्यात्मिक अर्थों में तैयार व्यक्तित्व उस जीवनकाल में काम आएगा, जहाँ मौत के बाद आदमी को रहना है।

सांसारिक अर्थों में तैयार व्यक्तित्व यह है कि आदमी व्यवसाय-संबंधी शिक्षा (professional education) प्राप्त करे। आदमी के अंदर व्यवसायिक क्षमता हो। आदमी के अंदर वे गुण हों, जिनके माध्यम से कोई आदमी लोगों के बीच लोकप्रिय होता है। आदमी तुरंत मिलने वाले लाभों को अंतिम सीमा तक महत्ता देता हो इत्यादि।

मौत के बाद के जीवनकाल में सफलता प्राप्त करने के लिए जिस तैयार व्यक्तित्व की ज़रूरत है, वह ऐसा व्यक्तित्व है जिसने वर्तमान संसार के अवसरों को आध्यात्मिक विकास और बौद्धिक विकास के लिए इस्तेमाल किया। ऐसा ही व्यक्तित्व मौत के बाद के जीवनकाल में मूल्यवान होगा। यह व्यक्तित्व वह है, जिसने अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करके सच्चाई की खोज की। जो शंकाओं के जंगल में विश्वास पर खड़ा हुआ। जिसने ईश्वर को अपने जीवन की एकमात्र सोच (concern) बनाया। जिसने निजी स्वार्थ को कुचलकर ईश्वर की इबादत[3] के तरीक़े को अपनाया। जो नकारात्मक परिस्थितियों में सकारात्मक सोच पर टिका रहा। जिसने सांसारिक इंसान बनने के बजाय ईश्वरीय इंसान होने का प्रमाण दिया। जिसने स्वार्थ के बजाय सिद्धांतवादी तरीक़े को अपनाया। जिसने अपने आपको नफरत से बचाया और अपने अंदर इंसानी भलाई की भावना को विकसित किया। जिसने आज़ादी के बाद भी आज्ञापालन (obedience) का तरीक़ा अपनाया।

---

[3] ईश्वर के समक्ष पूर्ण रूप से उसकी इच्छानुसार समर्पित करना।

## एक सीख

रोमन साम्राज्य के उत्थान के समय में उसके अंदर ज़्यादातर यूरोप, मध्य-पूर्व और अफ़्रीक़ा के उत्तरी किनारे के देश शामिल थे। रोमियों ने जो सड़कें, इमारतें और पुल बनाए, वह इतने शानदार थे कि उनके बनाए हुए कुछ पुल स्पेन में दो हज़ार वर्ष बाद भी आज तक बचे हुए हैं। रोमन क़ानून, आज भी यूरोप और अमेरिका के क़ानून की बुनियाद है इत्यादि, लेकिन रोमन साम्राज्य अपनी सारी महानताओं के बाद भी ख़त्म हो गया। अब उसका निशान या तो पुराने खंडहरों में है या उन पुस्तकों में जो लाइब्रेरियों का गौरव बनाने के लिए रखी जाती हैं। इस तरह की घटनाओं से इंसान सीख न ले तो वह कभी घमंड में न रहे। ये घटनाएँ बताती हैं कि आँख वाला वह है, जो अपने उत्थान में अपने पतन का दृश्य देखे, जो अपनी ऊँची इमारतों को पहले से ही खंडहर होता देख ले।

## जीवन का सत्य

रचयिता की योजना के अनुसार, सही इंसान वह है, जो अपने आपको वातावरण की 'कंडीशनिंग' (conditioning) से बचाए।

अध्ययन बताता है कि हमारा संसार जोड़े (pairs) के सिद्धांत पर बना है। यहाँ हर चीज़ जोड़े के रूप में है— इलेक्ट्रॉन और प्रोटॉन, नर पौधा और मादा पौधा, नर जंतु और मादा जंतु, औरत और आदमी, इसी तरह संसार जोड़े के रूप में है, नकारात्मक संसार और सकारात्मक संसार। संसार का एक जोड़ा वह है, जो आदर्श और संपूर्ण (ideal and perfect) है। वह हर तरह की सीमितता से मुक्त है। वहाँ इंसान की सभी इच्छाएँ अपने संपूर्ण रूप में पूरी होंगी। यह आदर्श संसार केवल चुने हुए लोगों को योग्यता के आधार पर मिलेगा। योग्यता के बिना कोई उस संसार में प्रवेश पाने वाला नहीं।

वर्तमान संसार इसी योजना का आरंभिक और अस्थायी हिस्सा है। इस योजना के अंतर्गत वर्तमान संसार चुनावी मैदान (selection ground) के रूप में बनाया गया है। यहाँ जो लोग पैदा किए जाते हैं, वे इसलिए पैदा किए जाते हैं, ताकि यहाँ की परिस्थितियों में रखकर देखा जाए कि उनमें से कौन अगले आदर्श संसार में बसाए जाने योग्य है और कौन उसके योग्य नहीं। योग्य लोगों को चुनकर अगले आदर्श संसार में हमेशा के लिए बसा दिया जाएगा और शेष लोग जो इस जाँच में पूरे नहीं उतरेंगे, वे अस्वीकृत (rejected) घोषित कर दिए जाएँगे।

लोगों का यह चुनाव किस आधार पर होगा? रचयिता की सृष्टि निर्माण योजना के अनुसार (creation plan of God), उसका आधार केवल एक है, वह यह कि किसने आज़ादी (free will) का ग़लत इस्तेमाल किया और किसने उसका सही इस्तेमाल किया। मिली हुई आज़ादी का सही इस्तेमाल या ग़लत इस्तेमाल ही वह एकमात्र मापदंड है, जिसके अनुसार लोगों के हमेशा भविष्य का निर्णय किया जाएगा।

रचयिता की योजना के अनुसार, सही इंसान वह है, जो अपने आपको वातावरण की 'कंडीशनिंग' (conditioning) से बचाए। जो रचयिता के बताए हुए नक्शे के अनुसार जीवन व्यतीत करे, जो मौत से पहले के जीवनकाल में, मौत के बाद के जीवनकाल के अनुसार अपने आपको तैयार करे।

वर्तमान संसार में हर औरत और आदमी इसी जाँच पर है। रचयिता की योजना के अनुसार, हर औरत और आदमी का रिकॉर्ड तैयार किया जा रहा है। जब इतिहास की समाप्ति पर इंसान का अगला दौर शुरू होगा, उस समय इंसानों का रचयिता प्रकट होकर सामने आ जाएगा।

यह निर्णय का दिन होगा। उस समय सभी पैदा होने वाले औरत और आदमी रचयिता के सामने उपस्थित किए जाएँगे। उस समय रचयिता अपने तैयार किए हुए रिकॉर्ड के अनुसार हर एक के अनंत भविष्य का निर्णय करेगा। यह निर्णय पूरी तरह से न्याय के आधार पर होगा और फिर किसी को स्थायी

स्वर्ग में बसा दिया जाएगा और किसी को नरक में डाल दिया जाएगा। परिस्थितियाँ बताती हैं कि यह आने वाला दिन बहुत निकट आ चुका है। अब अंतिम समय आ गया है, जबकि इंसान जागे और आने वाले अनंत जीवनकाल की तैयारी करे।

## स्वर्ग का परिचय

लॉर्ड म्यू ने अपनी एक घटना लिखी है कि वह एक बार एक टापू पर थे। वहाँ उन्हें सूरज के छिपने का दृश्य देखने का अवसर मिला। वह लिखते हैं कि यह दृश्य इतना सुंदर था कि मैंने चाहा कि मैं उसे हमेशा देखता रहूँ—

'I wish I could see this sunset forever.'

प्रकृति बहुत ही सुंदर है। उसे देखने से आदमी का कभी जी नहीं भरता। आदमी चाहता है कि प्रकृति को लगातार देखता रहे, लेकिन जीवन की माँगें उसे मजबूर करती हैं और उससे तृप्त हुए बिना वह उसे छोड़कर चला जाता है। प्रकृति वर्तमान संसार में स्वर्ग की प्रतिनिधि है। वह परलोक के स्वर्ग की झलक है। स्वर्ग में जो कोमलता, जो सुंदरता, जो अत्यधिक आकर्षण होगा, उसका एक दूर का निरिक्षण वर्तमान संसार में प्रकृति के रूप में होता है। प्रकृति हमें स्वर्ग की याद दिलाती है। वह हमें बताती है कि संसार में स्वर्ग वाले कर्म करो, ताकि परलोक में स्वर्ग को पा सको। संसार में आदमी स्वर्ग की झलक का भी पूरी तरह से आनंद नहीं ले सकता, लेकिन परलोक के आदर्श संसार में हर आदमी के लिए यह संभव होगा कि वह स्वर्ग का अंतिम सीमा तक आनंद ले सके।

# इंसानी व्यक्तित्व

इंसान का व्यक्तित्व परिवर्तन में अपरिवर्तनीय रहने का नाम है।

केमिस्ट्री का पहला पाठ जो एक छात्र सीखता है, वह यह कि कोई चीज़ नष्ट नहीं होती, वह अपना रूप बदल लेती है—

'Nothing dies, it only changes its form.'

इस सर्वव्यापक क़ानून (universal law) से इंसान के अलग होने का कोई कारण नहीं। जिस तरह पदार्थ के बारे में हम जानते हैं कि जलने या फटने या किसी और दुर्घटना से वह नष्ट नहीं होता, बल्कि रूप बदलकर संसार के अंदर अपने अस्तित्व को बचाए रखता है, उसी तरह हम मजबूर हैं कि इंसान को भी नष्ट न होने वाला प्राणी समझें और मौत को उसकी समाप्ति के अर्थ में न मानें।

यह केवल अप्रत्यक्ष रूप से अनुमान नहीं, बल्कि यह एक ऐसी घटना है, जो प्रत्यक्ष रूप से अनुभव से प्रमाणित होती है। उदाहरण के रूप में— कोशिका विज्ञान (cytology) बताता है कि इंसान का शरीर जिन छोटी-छोटी कोशिकाओं (cells) से मिलकर बना है, वे लगातार टूटती रहती हैं। एक औसत लंबाई के इंसान में उनकी संख्या लगभग 37 ट्रिलियन होती है। ये किसी इमारत की ईंटों की तरह नहीं हैं, जो हमेशा वहीं-के-वहीं बनी रहती हों, बल्कि वे प्रतिदिन अनगिनत संख्या में टूटती हैं और आहार उनकी जगह दूसरी ताज़ा कोशिकाएँ तैयार करता रहता है। यह टूट-फूट बताती है कि औसतन हर दस वर्ष में एक शरीर बदलकर बिल्कुल नया शरीर हो जाता है। मानो दस वर्ष पहले मैंने अपने जिस हाथ से किसी समझौते पर हस्ताक्षर किए थे, वह हाथ अब मेरे शरीर पर नहीं रहा। फिर भी 'पिछले हाथ' से हस्ताक्षर किया हुआ समझौता मेरा ही समझौता रहता है।

शरीर के बदल जाने के बाद भी अंदर का इंसान पहले की तरह अपनी वास्तविक स्थिति में मौजूद रहता है। उसका ज्ञान, उसकी याददाश्त, उसकी

इच्छाएँ, उसकी आदतें, उसके सोच-विचार लगातार उसके व्यक्तित्व में शामिल रहते हैं। इसलिए जीव-विज्ञान के एक विद्वान ने कहा है कि इंसान का व्यक्तित्व परिवर्तन में अपरिवर्तनीय रहने का नाम है :

'Personality is changelessness in change.'

## आयु और स्वास्थ्य

सफल व्यक्ति वह है, जो जीवन से ज़्यादा मौत के बारे में सोचे, जो हर मिली हुई चीज़ को ईश्वर का उपहार समझे।

एक साहब मेरठ (उत्तर प्रदेश) के रहने वाले थे। लगभग 45 वर्ष की आयु में उनकी मौत हो गई। पहली बार जब मैं उनसे मिला था तो देखने पर वह बिल्कुल ठीक और स्वस्थ दिखाई देते थे। बाद में उनको कैंसर की बीमारी हो गई। इलाज के बाद भी रोग बढ़ता गया, यहाँ तक कि वह बिस्तर पर पड़ गए। अंतिम समय में उनकी स्थिति यह थी कि वह हड्डियों का एक ढाँचा बन चुके थे। उनकी पाचन-प्रणाली इतनी ज़्यादा बिगड़ चुकी थी कि सादा भोजन भी वह नहीं ले सकते थे, यहाँ तक कि पानी पीना भी उनके लिए बहुत कठिन हो गया था। उस ज़माने में कोई आदमी उनका हालचाल जानने के लिए आता तो वह उससे कहते कि तुम मेरे बारे में न सोचो, बल्कि स्वयं अपने बारे में सोचो। तुम धन्य हो कि तुमको स्वस्थ शरीर मिला है। तुम खाना खाते हो, पानी पीते हो और धरती पर चलते हो। ये सब चीज़ें ईश्वर का उपहार हैं। वह जब चाहे इस उपहार को छीन ले और फिर तुम्हारे पास कुछ भी शेष न रहे।

इंसान को एक स्वस्थ शरीर मिला हुआ है। इंसान को पैदा होने के बाद यह स्वस्थ शरीर देखने पर अपने आप मिल जाता है, इसलिए वह उसको 'फॉर ग्रांटेड' ले लेता है। वह कभी सोचता नहीं कि स्वस्थ शरीर पूरी तरह से ईश्वर का उपहार है। इस उपहार को मानते हुए मुझे ईश्वर के आगे झुक जाना चाहिए।

यही मामला आयु का है। आदमी जब तक जीवित है, वह समझता है कि उसका यह जीवन हमेशा शेष रहेगा। वह कभी अपनी मौत के बारे में नहीं सोचता। यह निश्चित रूप से सबसे बड़ी भूल है।

यही हर औरत और हर आदमी की परीक्षा है। सफल व्यक्ति वह है, जो जीवन से ज़्यादा मौत के बारे में सोचे, जो हर मिली हुई चीज़ को ईश्वर का उपहार समझे। यही वह इंसान है, जो परीक्षा में सफल हुआ। इसके विपरीत जो इंसान ईश्वर का आभारी न हो और मौत को भुलाए हुए हो, वही वह व्यक्ति है, जो परीक्षा में विफल हो गया। पहले इंसान के लिए स्थायी स्वर्ग है और दूसरे इंसान के लिए स्थायी नरक।

## बुढ़ापे की आयु

निःसंदेह वह इंसान सबसे ज़्यादा अभागा इंसान है जिसको बुढ़ापे का ज़माना मिला, लेकिन वह उससे सीख हासिल न कर सका।

क़ुरआन में ईश्वर ने कहा — "...क्या हमने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी कि जिसको समझना होता, वह समझ जाता?" (35:37) इसका वर्णन का हदीस[4] की किताबों में भी है।

हदीस में आया है कि जिस आदमी को लंबी आयु या बुढ़ापे की आयु मिले, उसके पास ईश्वर के सामने प्रस्तुत करने के लिए कोई बहाना नहीं रहा। आदमी के ऊपर पहले बचपन का दौर आता है, उसके बाद जवानी का दौर आता है, उसके बाद बुढ़ापे का दौर आता है। बुढ़ापे का दौर वर्तमान संसार में किसी इंसान के लिए अंतिम दौर है, क्योंकि उसके बाद जो चरण आता है, वह मौत का चरण है, न कि कोई और चरण।

[4] हज़रत मुहम्मद के कथन, कर्म एवं मार्गदर्शन।

इस दृष्टि से बुढ़ापा एक तरह से 'मौत की पूर्व सूचना' (notice) की हैसियत रखता है। बुढ़ापे में शरीर के सभी अंग कमज़ोर हो जाते हैं, यहाँ तक कि कुछ अंग अपना काम करना बंद कर देते हैं। ये घटनाएँ बताती हैं कि मौत का समय निकट आ गया। वह मानो ज़बरदस्ती मौत की याद दिलाना (compulsory reminder) है। बुढ़ापा आदमी को क़ब्र के किनारे खड़ा कर देता है।

अगर आदमी का मन-मस्तिष्क जागरूक हो तो बुढ़ापे की आयु को पहुँचकर वह सोचने लगेगा कि अब बहुत जल्द वह समय आने वाला है, जबकि मेरी मौत हो और मैं ईश्वर के सामने हिसाब-किताब के लिए प्रस्तुत कर दिया जाऊँ। इस तरह बुढ़ापे के अनुभव आदमी को झंझोड़ते हैं, वह उसको परलोक की याद दिलाते हैं। बुढ़ापा आदमी को बताता है कि वर्तमान संसार में तुम्हारी यात्रा अब ख़त्म हो चुकी। अब तुम्हें निश्चित रूप से अगले जीवनकाल में प्रवेश करना है और हश्र[5] (day of judgement) की ईश्वरीय अदालत का सामना करना है— निःसंदेह वह इंसान सबसे ज़्यादा अभागा इंसान है जिसको बुढ़ापे का ज़माना मिला, लेकिन वह उससे सीख हासिल न कर सका। वह लगातार लापरवाही में रहा, यहाँ तक कि वह इसी स्थिति में मर गया।

## बुढ़ापे से सीख प्राप्त करना

"बुढ़ापा सीख के लिए है, बुढ़ापा शिकायत के लिए नहीं।"

इंसानी जीवन की एक सच्चाई वह है, जिसको बुढ़ापा कहा जाता है। बुढ़ापा कोई अनपेक्षित (undesired) चीज़ नहीं। बुढ़ापे की आयु में इंसान के लिए एक अवसर मौजूद होता है और वह सीख प्राप्त करना है। क़ुरआन की

[5] वह दिन जब मृत्यु के पश्चात सभी इंसानों को दोबारा पैदा जाएगा और ईश्वर उनके कर्मों का हिसाब लेगा।

सूरह अल-फ़ातिर में यह बात इन शब्दों में आई है— "...क्या हमने तुमको इतनी आयु न दी कि जिसको समझना होता, वह समझ सकता।" (35:37)

इंसान इस संसार में सीमित आयु के लिए पैदा होता है, इसलिए पैदा होते ही इंसान की उलटी गिनती (countdown) शुरू हो जाती है। लगभग 35 वर्ष तक उसका ग्राफ़ ऊपर की ओर जाता है। उसके बाद वह नीचे जाना शुरू होता है। अधेड़ उम्र, बुढ़ापा, अंत में मौत। इसी बीच उसको कई तरह के नुक़सानों का सामना करना पड़ता है, जैसे—बीमारी, हादसा, तरह-तरह की समस्याएँ इत्यादि। इस तरह आदमी से एक-एक चीज़ छिनती रहती है। पहले जवानी, फिर स्वास्थ्य, फिर शांति इत्यादि। यहाँ तक कि मौत का समय आता है और आदमी की हर वह चीज़ जिसको वह अपना समझता था, यहाँ तक कि उसका अपना शारीरिक अस्तित्व भी उससे छिन जाता है। उसके बाद जो चीज़ शेष रहती है, वह केवल 'मैं' (ego) है, उसके सिवा और कुछ नहीं।

मौत का अनुभव किसी इंसान के लिए सबसे ज़्यादा गंभीर अनुभव है। इस अनुभव का अर्थ यह है कि आदमी ने अपनी मौत से पहले के जीवनकाल में जो कमाया था, वह उससे हमेशा के लिए छिन गया। इसके आगे मौत के बाद जीवनकाल का मामला है। इस दूसरे चरण में आदमी के लिए केवल वह चीज़ काम आएगी, जो उसने अच्छे कामों के रूप में अपने आगे के लिए भेजी। इस सच्चाई को क़ुरआन की सूरह अल-हश्र में इन शब्दों में बताया गया है—"ऐ ईमान लाने वालो ! ईश्वर से डरो और हर आदमी देखे कि उसने कल के लिए क्या भेजा।" (59:18)

"बुढ़ापा सीख के लिए है, बुढ़ापा शिकायत के लिए नहीं।"

# हर आदमी मौत का मुसाफ़िर

मौत से पहले के जीवनकाल को केवल एक अस्थायी यात्रा समझे और अपना सारा ध्यान मौत के बाद के जीवनकाल की तैयारी में लगा दे।

एक ख़बर मीडिया में आई है। टाइम्स ऑफ़ इंडिया में यह ख़बर इस तरह छपी है—

British TV star Jade Goody, who has been diagnosed with cancer, says she has started planning for her funeral, adding she wants "people to cry over me". "Most people plan their weddings. But I am planning my funeral", Goody told OK Magazine. Goody was diagnosed with cervical cancer in August, 2008 just as she prepared to appear in the Indian version of the British reality TV show celebrity Big Brother.

(New Delhi, October 9, 2008, p. 21)

ब्रिटिश टी.वी. स्टार जेड गुडी अपने व्यवसाय की दृष्टि से चोटी (peak) पर थीं। अचानक अगस्त, 2008 की एक चिकित्सीय जाँच में उनको बताया गया कि उन्हें कैंसर की बीमारी हो चुकी है यानी लाइलाज बीमारी। उन्होंने भविष्य की अपनी व्यवसायिक योजनाओं को रद्द कर दिया। उन्होंने कहा कि अब मुझे मौत की तैयारी करनी है। लोग शादी की योजना बनाते हैं, मुझको अपनी मौत की योजना बनानी हैं।

'Most people plan their weddings,
But I am planning my funeral.'

यही हर औरत और हर आदमी की कहानी है। लोग जीवन का उत्सव मनाने के लिए सक्रिय रहते हैं, हालाँकि हर एक का अंतिम परिणाम यह है कि उत्सव पूरा होने से पहले उसकी मौत हो जाए और वह वर्तमान संसार से निकलकर अगले संसार में पहुँच जाए। ऐसी स्थिति में हर औरत और हर

आदमी को यह करना है कि वह मौत से पहले के जीवनकाल को केवल एक अस्थायी यात्रा समझे और अपना सारा ध्यान मौत के बाद के जीवनकाल की तैयारी में लगा दे।

लोग अपना जन्मदिन मनाते हैं। हालाँकि हर जन्मदिन केवल इस बात की घोषणा है कि आदमी की आयु का एक वर्ष और कम हो गया। ऐसी स्थिति में हर औरत और हर आदमी को चाहिए कि वह हर वर्ष के पूरा होने पर होने वाली मौत को याद करे, क्योंकि अगले जन्मदिन का आना निश्चित नहीं, लेकिन मौत का होना निश्चित है। समझदार वह है, जो इस सबसे बड़ी सच्चाई को याद रखे जिसका दूसरा नाम मौत है।

# मौत

मरने वाला शांत भाषा में बता रहा है कि जो कुछ मुझ पर बीता, यही तुम्हारे ऊपर भी बीतने वाला है।

मौत क्या है? मौत ज्ञात संसार से अज्ञात संसार की ओर छलाँग है। मौत 'अपने संसार' से निकलकर 'दूसरे के संसार' में जाना है। कैसी चौंका देने वाली है यह घटना ! लेकिन इंसान की यह लापरवाही कितनी विचित्र है कि वह अपने चारों ओर लोगों को मरते हुए देखता है, फिर भी वह नहीं चौंकता। हालाँकि हर मरने वाला शांत भाषा में दूसरों को बता रहा है कि जो कुछ मुझ पर बीता, यही तुम्हारे ऊपर भी बीतने वाला है। वह दिन आने वाला है, जबकि वह पूरी विवशता के साथ अपने आपको फ़रिश्तों[6] के हवाले कर दे। मौत हर आदमी को इसी आने वाले दिन की याद दिलाती है। मौत का हमला पूरी तरह से एकतरफ़ा हमला है। यह शक्ति और अशक्ति का मुक़ाबला है।

[6] ईश्वर की आज्ञानुसार कार्य करने वाले देवदूत।

इसमें इंसान के बस में इसके सिवा और कुछ नहीं होता कि वह पूरी बेबसी के साथ दूसरे पक्ष के निर्णय पर सहमत हो जाए। वह एकतरफ़ा तौर पर हार को स्वीकार कर ले।

मौत इंसानी जीवन की दो अवस्थाओं के बीच विभाजक की तरह है। मौत आदमी को वर्तमान संसार से अगले संसार की ओर ले जाती है। यह समर्थता से असमर्थता की ओर यात्रा है। यह परीक्षा के बाद उसका परिणाम पाने के दौर में प्रवेश करना है। मौत से पहले के जीवन में आदमी सच्चाई को स्वीकार नहीं करता। वह तर्क (logic) के आगे झुकने पर सहमत नहीं होता। मौत इसलिए आती है कि उसको असहाय करके सच्चाई के आगे झुकने पर मजबूर कर दे। जिस सच्चाई को उसने सम्मान के साथ स्वीकार नहीं किया था, उसको वह अपमानित होकर स्वीकार करे। जिस सच्चाई के आगे वह अपनी इच्छा से नहीं झुका था, उस सच्चाई के आगे वह मजबूर होकर झुके और उसके इनकार के लिए कुछ न कर सके।

इंसान आज सच्चाई के समर्थन में कुछ शब्द बोलना गवारा नहीं करता, जब मौत होगी तो वह चाहेगा कि डिक्शनरी के सारे शब्द सत्य के समर्थन में इस्तेमाल कर डाले, लेकिन उस समय कोई न होगा, जो उसके शब्दों को सुने। इंसान आज ढिठाई (stubbornness) करता है, मौत जब उसको पछाड़ेगी तो वह पूरी तरह से विवश और विनम्र (humble) बन जाएगा, लेकिन उस समय कोई न होगा, जो उसकी विवशता और विनम्रता की सराहना करे।

## मौत की समझ

सफल इंसान वह है जो ईश्वरीय निर्णय के अनुसार मौत के मामले की खोज कर ले और उसके अनुसार अपने जीवन को आकार दे।

लोग देखते हैं कि हर पैदा होने वाला एक सीमित समय के बाद मर जाता है। इसके बावजूद यह बहुत ही विचित्र बात है कि कोई व्यक्ति स्वयं अपनी मौत के बारे में नहीं सोचता। वह दूसरों को मरते हुए देखता है, लेकिन स्वयं अपनी मौत के बारे में वह लापरवाही में रहता है।

वर्तमान समय में DNA की खोज इस प्रश्न का उत्तर है। यह एक नया विज्ञान है। इस पर संसार के अनेक प्रतिभाशाली लोगों ने काम किया है। इसमें इंडिया के नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ० हरगोविंद ख़ुराना (मृत्यु : 2011) का नाम भी शामिल है। इस आधुनिक खोज से यह ज्ञात हुआ है कि हर इंसान के शरीर में लगभग 37 ट्रिलियन जीवित कोशिकाएँ (living cells) होती हैं। हर कोशिका के नाभिक (nucleus) में एक अदृश्यमान DNA मौजूद रहता है। DNA के अंदर इंसानी व्यक्तित्व के बारे में सभी छोटी-बड़ी जानकारियाँ कोड के रूप में मौजूद रहती हैं। यह जानकारियाँ इतनी ज़्यादा होती हैं कि अगर उनको डी-कोड किया जाए तो वह ब्रिटानिका जैसी बड़ी और मोटी एनसाइक्लोपीडिया (encyclopedia) के एक मिलियन से ज़्यादा पन्नों से भर देंगी।

One human DNA molecule contains enough information to fill a million page of encyclopaedia.

DNA के अंदर इंसानी व्यक्तित्व के बारे में सभी जानकारियाँ दर्ज होती हैं, लेकिन इस सूची में केवल एक अपवाद (exception) है और वह मौत है । DNA की लंबी सूची मौत की कल्पना से ख़ाली है। मौत की कल्पना इंसानी चेतना (human consciousness) में मौजूद नहीं। यही कारण है कि आदमी दूसरों को मरते हुए देखता है, लेकिन वह स्वयं अपनी मौत के बारे

में सोच नहीं पाता। यही इंसान की परीक्षा है।

किसी आदमी की मौत DNA की प्रोग्रामिंग के अंतर्गत नहीं होती, बल्कि वह सीधे तौर पर ईश्वरीय निर्णय के अंतर्गत होती है। सफल इंसान वह है, जो अपने अंदर एंटी प्रोग्रामिंग सोच पैदा करे। वह ईश्वरीय निर्णय के अनुसार मौत के मामले की खोज कर ले और उसके अनुसार अपने जीवन की योजनाओं को आकार दे।

# मौत के दरवाज़े पर

आदमी अपने स्वभाव के कारण हमेशा कंडीशनिंग के अंतर्गत सोचता है। यही इंसान की लापरवाही का सबसे बड़ा कारण है।

आदमी समझता है कि वह जीवन जी रहा है, लेकिन सच्चाई यह है कि हर औरत और हर आदमी मौत के दरवाज़े पर खड़ा हुआ है। जब मौत का कोई समय निश्चित नहीं तो हर क्षण मौत का क्षण है। इंसान का हर अगला क़दम मौत की ओर जाने वाला क़दम है। जीवन हर इंसान के लिए केवल आज का अनुभव है, कल का अनुभव नहीं। हर आदमी के लिए आज का दिन जीवन का दिन है और कल का दिन मौत का दिन।

मौत ज्ञात संसार से अज्ञात संसार की यात्रा का नाम है। आदमी प्रतिदिन यात्रा करता है। कभी छोटी यात्रा और कभी बड़ी यात्रा, कभी देश के अंदर यात्रा और कभी देश के बाहर यात्रा । ये सभी यात्राएँ एक ज्ञात स्थान से चलकर दूसरे ज्ञात स्थान तक जाने का नाम हैं । इस तरह की यात्राओं का आदमी इतना ज़्यादा आदी हो चुका है कि वह इसे कोई गंभीर चीज़ नहीं समझता, लेकिन मौत की यात्रा का मामला इससे बिल्कुल अलग है। मौत की यात्रा में ऐसा होता है कि आदमी एक ज्ञात संसार से निकलकर दूसरे अज्ञात संसार की ओर जाता है। यह निश्चित रूप से हर आदमी के लिए एक

बहुत ही गंभीर मामला है, लेकिन आदमी अपनी कंडीशनिंग के कारण उसकी गंभीरता को महसूस नहीं करता। वह संसार में जिन यात्राओं का अनुभव करता है, उनका वह इतना आदी हो जाता है कि वह गहरी समझ के अंतर्गत मौत की यात्रा जैसी यात्रा के बारे में सोच नहीं पाता। इस कारण हर आदमी के लिए मौत एक दूर की ख़बर बनी हुई है, वह उसके लिए कोई निकटतम घटना नहीं।

आदमी अपने स्वभाव के कारण हमेशा कंडीशनिंग के अंतर्गत सोचता है। यही इंसान की लापरवाही का सबसे बड़ा कारण है। मौत की गंभीरता को समझने के लिए आवश्यक है कि आदमी अपनी कंडीशनिंग को तोड़े, वह वातावरण से प्रभावित अपनी मानसिकता से बाहर आकर मौत के बारे में सोचे, वह अपने विवेक को पूरी तरह से जगाए। उसके बाद ही यह संभव है कि आदमी मौत की सच्चाई को समझे, जो निश्चित रूप से हर इंसान का सबसे ज़्यादा गंभीर मामला है।

## समय समाप्त हो गया

मौत से पहले का जीवन वास्तव में परीक्षा का दौर है और मौत के बाद का जीवन परीक्षा का परिणाम (result) निकलने का दौर।

स्कूल में विद्यार्थियों की परीक्षा हो रही थी। विद्यार्थी मेज़ पर झुके हुए अपना-अपना प्रश्न-पत्र हल कर रहे थे, यहाँ तक कि परीक्षा का निश्चित समय पूरा हो गया। तुरंत परीक्षा-कक्ष में उपस्थित ज़िम्मेदारों की ओर से घोषणा की गई — “लिखना बंद करो, समय समाप्त हो गया।”

‘Stop writing, time is over.’

यह मामला जो परीक्षा-कक्ष में घटित हुआ, वही बड़े पैमाने पर जीवन का मामला भी है। इस संसार में हर औरत और हर आदमी एक बड़े परीक्षा-

कक्ष में है। यहाँ हर एक अपनी-अपनी परीक्षा दे रहा है। हर एक के लिए एक समयसीमा निश्चित है। इस समयसीमा के पूरा होते ही ईश्वर का फ़रिश्ता आता है और शांत भाषा में घोषणा करता है कि तुम्हारे कर्मों का समय समाप्त हो गया। अब तुम्हें मरना है और मरने के बाद अपने रचयिता और पालनहार के सामने जवाबदेही के लिए प्रस्तुत होना है।

शिक्षा-संबंधी परीक्षा का मामला जो हर विद्यार्थी के साथ घटता है, वह एक उदाहरण है जिससे हर औरत और हर आदमी विस्तृत अर्थों में जीवन की परीक्षा के मामले को समझ सकते हैं।

जीवन परीक्षा की स्थिति का नाम है और मौत इसका नाम है कि आदमी को अपने कर्मों का फल पाने के लिए अगले संसार में भेज दिया जाए। मौत से पहले का जीवन वास्तव में परीक्षा का दौर है और मौत के बाद का जीवन परीक्षा का परिणाम (result) निकलने का दौर। जो व्यक्ति जाँच और परीक्षा के जीवनकाल में अच्छे-बुरे की समझ के साथ जीवन बिताएगा, वही अगले जीवनकाल में श्रेष्ठ परिणाम को पाएगा। जो लोग इस मामले में लापरवाह सिद्ध हों, उनको बाद के जीवनकाल में पछतावा और निराशा के सिवा और कुछ नहीं मिलेगा।

परीक्षा-कक्ष के अंदर एक विद्यार्थी जिस मानसिकता के साथ रहता है, उसी मानसिकता के साथ हमें अपने पूरे जीवन में रहना है। हर एक को यह प्रयास करना है कि वह ईश्वर की ओर से दिए हुए परीक्षा-पत्र को सही ढंग से हल करे, ताकि परीक्षा की समयसीमा पूरी होने के बाद जब उसका परिणाम सामने आए तो वह उसके लिए सफलता की शुभ सूचना हो, न कि असफलता की घोषणा।

# मौत की सूचना

बाद आने वाली कमज़ोरी और बीमारी हमेशा इसलिए आती है कि आदमी चौंक उठे। वह मौत से पहले मौत की तैयारी करने लगे।

एक आदमी की उम्र 75 वर्ष हो गई। जीवन के आरंभिक दौर में उसका स्वास्थ्य अच्छा था। अब उसको बीमारियों ने घेर लिया। यह बीमारी उसके लिए मौत की सूचना थी, लेकिन उसने बीमारी को केवल इलाज का मामला समझा। उसने कई अलग-अलग डॉक्टरों और अस्पतालों से राय लेना शुरू कर दिया। जब उसका अपना पैसा ख़त्म हो गया तो उसने क़र्ज़ लेकर अपना महँगा इलाज कराना शुरू कर दिया, लेकिन उसे फिर से स्वास्थ्य न मिल सका। कुछ वर्ष बीमार रहकर वह मर गया— यह एक इंसान की कहानी नहीं है, बल्कि यही लगभग हर औरत और हर मर्द की कहानी है।

बुढ़ापा हर आदमी के लिए इस बात की सूचना होता है कि मौत निकट आ गई। इसके बाद जब उसे बीमारियाँ घेरना शुरू कर देती हैं तो वह आदमी को और ज़्यादा झंझोड़ने के लिए होती हैं। वह इसलिए होती हैं कि आदमी अगर सो रहा है तो वह जाग जाए और अगर वह जाग गया है तो उठ जाए और अगर वह उठ गया है तो चलने लगे। बुढ़ापा और बुढ़ापे के बाद आने वाली कमज़ोरी और बीमारी हमेशा इसलिए आती है कि आदमी चौंक उठे। वह मौत से पहले मौत की तैयारी करने लगे। वह मौत के बाद आने वाली परिस्थितयों के बारे में सोचे और उसके अनुसार अपने जीवन की अंतिम योजना बनाए।

लेकिन इंसान घटनाओं से सीख हासिल नहीं करता। बुढ़ापा और बीमारी उसे मौत की सूचना देते हैं, लेकिन वह मौत के बारे में सोचने के बजाय केवल इलाज के बारे में सोचता है। वह डॉक्टरों और अस्पतालों के पीछे दौड़ता है, यहाँ तक कि वह निराशा के साथ मर जाता है। दोबारा जो चीज़ उसको मिलती है, वह स्वास्थ्य नहीं है, बल्कि मौत है।

यह एक ऐसी हक़ीक़त है, जो हर आदमी प्रतिदिन अपने आस-पास के वातावरण में देखता है, लेकिन कोई आदमी उससे सीख हासिल नहीं करता। इस मामले में हर आदमी अंधा बना हुआ है। वह केवल इस प्रतीक्षा में है कि मौत उसकी आँख खोले, लेकिन मौत के बाद आँख का खुलना किसी औरत या आदमी के कुछ काम आने वाला नहीं।

## मौत की धारणा

मौत की घटना वास्तव में जीवन का संदेश है, जो करना है, उसे आज के दिन कर लो, क्योंकि कल के दिन करने का समय शेष नहीं रहेगा।

मौत (death) के शब्द को अगर आप डिक्शनरी में देखें तो उसमें मौत का अर्थ यह लिखा हुआ होगा– जीवन का स्थायी अंत।

'Permanent cessation of life.'

शब्दकोश (dictionary) में दी गई मौत की यह परिभाषा मौत की नकारात्मक छवि प्रस्तुत करती है। इसका अर्थ यह निकलता है कि आदमी पूर्ण इंसान की हैसियत से पैदा हो, लेकिन थोड़ी अवधि (duration) तक जीवित रहकर हमेशा के लिए उसका समापन हो जाए। उसकी सभी इच्छाएँ (desires) और उसकी सारी क्षमताएँ इस तरह मिट जाएँ कि दोबारा उनका अस्तित्व में आना संभव न रहे।

इस्लाम इसकी तुलना में जीवन की सकारात्मक सोच प्रस्तुत करता है। इस्लाम के अनुसार, मौत जीवन का समापन नहीं, मौत का अर्थ है इंसान के लिए उसके दूसरे जीवनकाल का शुरू होना।

'Death is not the end of life. Death marks
the beginning of the second phase of human life.'

इस्लाम के अनुसार, इंसान को स्थायी प्राणी (eternal being) के रूप

में पैदा किया गया, फिर उसके जीवनकाल (lifespan) को दो हिस्सों में बाँट दिया गया— मौत से पहले का दौर और मौत के बाद का दौर। मौत से पहले का जीवनकाल तैयारी की जगह है और मौत के बाद का जीवनकाल तैयारी के अनुसार अपना स्थायी परिणाम पाने की जगह।

इस सृजन-योजना (creation plan) के अनुसार, आदमी को चाहिए कि वह मौत से पहले के जीवन को तैयारी का दौर (prepatory period) समझे और उसको पूरी तरह से तैयारी में व्यतीत करे, क्योंकि मौत के बाद जीवन का जो दौर आदमी के सामने आएगा, उसमें कर्म करना नहीं होगा, बल्कि केवल अपने कर्मों का फल पाना होगा।

मौत की घटना वास्तव में जीवन का संदेश है और वह यह है— जो करना है, उसे आज के दिन कर लो, क्योंकि कल के दिन करने का समय शेष नहीं रहेगा।

## मौत की हक़ीक़त

मौत का स्वाद इतना ज़्यादा कड़वा है कि वह
दूसरे सभी स्वादों को ढह देने वाला है।

क़ुरआन की सूरह आले-इमरान में वर्णन है— "हर इंसान मौत का स्वाद चखने वाला है…।" (3:185)

इंसान संसार के स्वादों (taste) में जीता है, लेकिन अंत में जो स्वाद इंसान के लिए पहले से निश्चित है, वह मौत का स्वाद है। मौत का स्वाद इतना ज़्यादा कड़वा है कि वह दूसरे सभी स्वादों को ढह देने वाला है, जैसा कि हदीस में वर्णन है— "मौत को बहुत ज़्यादा याद करो, जो लज़्ज़तों को ढह देने वाली है।" (सुनन अत-तिरमिज़ी, किताब अज़-जुहद)

स्वाद या लज़्ज़त का शब्द यहाँ किसी सीमित अर्थ में नहीं है, बल्कि

यह विस्तृत अर्थों में है। आदमी एक लज़्ज़तपसंद प्राणी (pleasure seeking animal) है। हर चीज़ में उसको लज़्ज़त महसूस होती है। खाने-पीने में, अच्छा कपड़ा पहनने में, अच्छा घर बनाने में, अच्छी सवारियों पर यात्रा करने में, मनोरंजन की सभाओं में शामिल होने में, प्रसिद्धि और सत्ता की सीट पर बैठने में इत्यादि।

इस तरह की सभी चीज़ों में आदमी को बहुत ही ज़्यादा लज़्ज़त मिलती है। वह इन लज़्ज़तों में गुम हो जाता है, लेकिन अगर वह सच में यह सोचे कि मौत के आते ही अचानक ये सभी लज़्ज़तें उससे छिन जाएँगी तो उसका जीवन बिल्कुल बदल जाए, जैसे— जब कोई व्यक्ति दूसरे इंसान की कमियों को उछालता है तो अनजाने में उसको यह ख़ुशी हासिल होती है कि मैं एक निर्दोष इंसान हूँ। जब कोई इंसान किसी को अपमानित करता है तो यह उसके लिए उसके अहंकार (ego) की संतुष्टि का कारण बनता है। कोई आदमी अन्यायपूर्वक किसी के माल और जायदाद पर अधिकार करता है तो वह उसे अपनी होशियारी समझकर संतुष्टि प्राप्त करता है।

इस तरह के कई अलग-अलग रूप हैं, जिन पर विचार करके इंसान को ख़ुशी और गर्व का अहसास होता है। वह अपने आपको सफल इंसान समझ लेता है, लेकिन अगर उसको विश्वास हो कि मौत का फ़रिश्ता किसी भी समय आएगा और अचानक उसके जीवन को समाप्त कर देगा, इस सच्चाई का अहसास अगर किसी को वास्तविक अर्थों में हो जाए तो वह महसूस करेगा कि मौत से पहले ही उसकी मौत घटित हो चुकी है।

# मौत के निकट

वह अपने बनाए हुए सांसारिक घर में पहुँचने ही वाला होता है कि उसे परलोक की अदालत में पहुँचा दिया जाता है।

2 फ़रवरी, 2003 को सारे संसार के अख़बारों की पहली ख़बर केवल एक थी। वह यह कि अमेरिका का अंतरिक्ष शटल कोलंबिया धमाके के साथ टुकड़े-टुकड़े हो गया। यह कोलंबिया की 28वीं अंतरिक्ष यात्रा थी। यह अमेरिकी शटल अपने 16 दिनों की यात्रा के बाद धरती पर उतरने वाला था, जो लगभग दो लाख फ़ीट की ऊँचाई पर 19 हज़ार किलोमीटर प्रतिघंटा की गति से धरती की ओर बढ़ रहा था कि अचानक धरती के नियंत्रण-कक्ष से उसका संपर्क टूट गया और वह धमाके के साथ टुकड़े-टुकड़े हो गया। उस समय उसमें 7 मुसाफ़िर थे, जो सब-के-सब मर गए। इस ख़बर का शीर्षक नई दिल्ली के अंग्रेज़ी अख़बार टाइम्स ऑफ़ इंडिया ने इन शब्दों में इस तरह लिखा है—

‘घर से सिर्फ़ 16 मिनट दूर’

‘Just 16 minutes from home.’

मैंने इस ख़बर को पढ़ा तो सोचा कि यही इस संसार में हर इंसान का अंतिम परिणाम है। हर इंसान अपना एक सपनों का घर (dream home) बनाता है, जिसमें वह ख़ुशियों से भरा जीवन बिताना चाहता है, लेकिन अभी वह उस घर से केवल 16 मिनट दूर होता है कि अचानक उसकी मौत आ जाती है। वह अपने बनाए हुए सांसारिक घर में पहुँचने के बजाय परलोक की अदालत में पहुँचा दिया जाता है।

इस अंतरिक्ष शटल में एक हिंदुस्तानी मूल की औरत कल्पना चावला (उम्र 41 वर्ष) भी थीं, जो करनाल में पैदा हुईं। सारा हिंदुस्तान उनकी वापसी की प्रतीक्षा कर रहा था। उनके दोस्त और रिश्तेदार यात्रा करके अमेरिका पहुँच चुके थे, ताकि स्पेस शटल के उतरने के बाद वे कल्पना चावला को सीधे तौर पर बधाई दे सकें।

कल्पना चावला अगर सुरक्षित रूप से वापस आ गई होतीं तो उनका स्वागत एक नायिका के जैसा होता, लेकिन मौत ने बीच में आड़े आकर एक सुखद अंत को एक शोकपूर्ण घटना में परिवर्तित कर दिया। यह घटना कल्पना चावला के लिए एक व्यक्तिगत अनुभव था और दूसरों के लिए वह एक सीख। इस घटना को जानने वाला वही है, जो उसके अंदर स्वयं अपनी तस्वीर देख ले, जो उसके अंदर अपने स्वयं के लिए सीख प्राप्त कर ले।

## मौत का अनुभव

परलोक में केवल परिणाम है, वहाँ किसी
को फिर से नई शुरुआत मिलने वाली नहीं।

मशहूर टेनिस खिलाड़ी मार्टिना नवरातिलोवा अपनी चिकित्सा संबंधी सलाह के लिए एक डॉक्टर के पास गई। डॉक्टर ने उसकी चिकित्सीय जाँच करने के बाद कहा कि तुम्हारे फेफड़े में कैंसर हो चुका है और वह अगली स्टेज पर है। डॉक्टर द्वारा रोग की पहचान (diagnosis) की चर्चा करते हुए मार्टिना ने कहा कि यह ख़बर मेरे लिए 9/11 के बराबर है।

'It was such a shock for me. It was my 9/11.'

मार्टिना ने यह बात इसलिए कही कि उसे मौत बिल्कुल निकट दिखाई देने लगी, लेकिन मौत के बाद का जो जीवन है, वह इससे भी ज़्यादा गंभीर है। क़ुरआन के शब्दों में मौत, संसाधनों से हर तरह के संबंध और संपर्क का पूरी तरह से टूटने का नाम है (अल-बक़रह, 166)। मौत के बाद अचानक आदमी एक दूसरे संसार में पहुँच जाता है, जो वर्तमान संसार की तुलना में हर मामले में बिल्कुल अलग होता है।

मौत के बाद अचानक इंसान पर दो गंभीर सच्चाइयाँ प्रकट हो जाती हैं— एक यह कि अब मौत से पहले वाले दौर में वापसी संभव नहीं, जहाँ उसने अपना एक संसार बनाया था। दूसरी यह कि मौत के बाद वाले दौर में

वह अपने लिए एक और संसार नहीं बना सकता।

यह अहसास आदमी को अंतहीन निराशा और गहरे पछतावे में डाल देगा और निःसंदेह इससे ज़्यादा भयानक अनुभव और कोई नहीं।

वर्तमान संसार का मामला यह है कि यहाँ अगर एक अवसर खोया जाए तो उसके बाद उसको दूसरा अवसर (second chance) मिल जाता है, जिसके माध्यम से वह अपनी हारी हुई बाज़ी को दोबारा जीत में बदल सके, लेकिन परलोक में ऐसा होना संभव नहीं। परलोक में ऐसा नहीं हो सकता कि आदमी अपने लिए दूसरा अवसर पा ले। परलोक में किसी इंसान के लिए दोबारा कोई अवसर नहीं। पहले अवसर या दूसरे या तीसरे अवसर का मामला केवल वर्तमान संसार में सामने आता है। परलोकवादी संसार पूरी तरह से इससे अलग है। परलोक में केवल परिणाम है, वहाँ किसी को फिर से नई शुरुआत मिलने वाली नहीं।

## कोई आदमी मौत को जीत नहीं सकता

एक जोगी इस उम्मीद के साथ उसके महल में लाया गया कि उसकी प्रार्थना सफल होगी, लेकिन वह निष्प्रभावी सिद्ध हुई।

उसका आदेश था कि मौत का शब्द उसके सामने न बोला जाए, लेकिन साठवें वर्ष में पहुँचकर उसको पता चला कि कोई भी व्यक्ति मौत को जीत नहीं सकता।

स्पेन के तानाशाह फ्रेंको कई दिन बीमारी से लड़ने के बाद आख़िरकार इस संसार से चल बसे। फ्रेंको के जीवनकाल को लंबा करने के उद्देश्य से स्पेन में डॉक्टरों ने जो रात-दिन प्रयास किया, उससे चिकित्सा के क्षेत्र में बड़ी ज़बरदस्त बहस छिड़ गई थी कि क्या उस समय जबकि प्रकृति के सभी क़ानून के अनुसार उनके होशो-हवास जवाब दे चुके थे, उन्हें कुछ सप्ताह पहले ही मरने

देना चाहिए था? या क्या डॉक्टर इस बात पर सही थे कि हर तरह की चिकित्सीय सहायता उन्हें प्रदान करके कुछ देर तक और शारीरिक रूप से जीवित रखने के लिए उनके तापमान को आंशिक रूप से स्थिर कर देते? इसके अलावा क्या यह बात नैतिक नियमों के अनुसार है कि क़ौम के किसी लीडर का जीवन अप्राकृतिक (unnatural) रूप से लंबा कर देना चाहिए या कि उसे लंबा किया जा सकता है? क्योंकि यह चिकित्सा के संसार में एक ज़बरदस्त बहस छिड़ने का कारण हो सकती है। बहुत से विद्वानों ने इस विषय पर चर्चा की है ।

यह बात असाधारण रूप से संयोगात्मक (coincident) है कि इस मामले पर एक पुस्तक अभी हाल ही में प्रकाशित हुई है, जिसके लिखने में 13 वर्ष लग गए थे। प्रसिद्ध इतिहासकार पॉल मरे केंडल (Paul Murray Kendall) ने यह पुस्तक फ्रांस के राजा लुई-11 के बारे में लिखी है, जिसे मरे हुए लगभग 500 वर्ष हो चुके हैं। लुई एक ऐसा राजा था, जो मरना नहीं चाहता था, इसलिए उसने बहुत प्रयास किया कि उसका जीवन लंबा हो जाए।

फ्रेंको की तरह राजा लुई एक ऐसी क़ौम बनाने का ज़िम्मेदार था, जिसकी केंद्रीय सरकार बहुत मज़बूत थी, लेकिन क़ौम उसके आँख बंद करने के बाद बिखराव या आपसी लड़ाई का शिकार हो सकती थी। उसे इस बात की अच्छी तरह से जानकारी थी, जैसा कि हमारे आज के ज़माने के लीडरों को जानकारी है।

लुई की आयु 58 वर्ष थी, जब उस पर लकवे (paralysis) का हमला हुआ था। उसे तब इस बात की जानकारी हो गई कि वह बहुत देर तक जीवित न रह सकेगा, क्योंकि उसके परिवार में कोई भी राजा अपना 60वाँ जन्मदिन नहीं मना सका था।

लुई किसी सुरक्षित क़िले में शांति से रहना चाहता था। इसलिए उसने एक महल में रहना शुरू किया, जहाँ बहुत कम लोगों को प्रवेश की अनुमति थी। उस महल की ओर जाने वाली सड़कों पर सुरक्षा-बाड़ लगा दी गई थी और महल के चारों ओर खाई खोद दी गई थी। चालीस तीरंदाज़ पत्थरों की

दीवारों पर बैठे पहरा देते रहते थे। उन्हें आदेश था कि अगर कोई अनुमति के बिना महल के निकट आने की हिम्मत करे तो उसे मार दिया जाए।

इसके अलावा 400 घुड़सवार दिन-रात इलाक़े में पहरा देते रहते थे। महल के अंदर राजा लुई बड़ा ऐश-ओ-आराम वाली ज़िंदगी (luxurious life) बिता रहा था। उसके कमरे में ख़ूबसूरत तस्वीरें लटकी हुई थीं। निपुण संगीतकार (expert musician) अपना संगीत सुनाकर उसे ख़ुश रखते। बड़े-बड़े पिंजरों में बंद कुत्ते और पक्षी, जो वहाँ रखे हुए थे, उसे बहुत पसंद थे। अधिकांश समय वह अपने शरीर को सिकोड़े हुए दयनीय स्थिति में आरामकुर्सी पर ही बिताता। उसके सामने एक ख़ूबसूरत बग़ीचा था, जिसे वह अपने महल की दूसरी मंज़िल से देखता रहता।

हालाँकि वह शारीरिक रूप से कमज़ोर हो चुका था। अपनी प्रजा का जीवन और मौत उसके अधिकार में थी, इस पर भी वह चिंतित था कि अपनी प्रजा पर यह बात कैसे स्पष्ट करे कि वह सबसे बड़ा शासक है। उसको सबसे बड़ा डर इस बात का था कि सत्ता का भूखा कोई सरदार या सामंत उसे हटाकर स्वयं सत्ता न सँभाल ले और उसे अपना अंतिम समय एक दीवाने बूढ़े की तरह न बिताना पड़े।

अपने बुढ़ापे में लुई हर एक पर संदेह करने लगा था। उसे अपने पुराने कर्मचारियों पर संदेह था, इसलिए उन्हें हटाकर उनकी जगह उसने विदेशी लोग भरती कर लिये थे और फिर उनको और उन अधिकारियों को भी, जो उसकी सुरक्षा के लिए नियुक्त थे, वह लगातार बदलता रहता था। वह उनसे यही कहा करता, "प्रकृति को परिवर्तन बहुत पसंद है।"

सरकारी काम-काज में हिस्सा लेने के लिए वह बहुत बूढ़ा हो चुका था। उसे यह चिंता भी सताए जा रही थी कि शायद प्रजा इस बात को भी भूल जाए कि वह अभी तक जीवित है। उस समय के एक इतिहासकार ने उसके बारे में लिखा है—

"यह सिद्ध करने के लिए कि वह अभी तक शासक है, उसने हर तरह

की चालें चलीं। वह अधिकारियों को उनके पद से हटा देता और उनकी जगह नए अधिकारी नियुक्त कर दिए जाते। वह किसी का वेतन कम कर देता तो किसी का वेतन बढ़ा देता। उसने अपना समय अधिकारियों को नियुक्त करने और उनका भट्ठा बिठाने में लगाया था।"

लेकिन यह सब कुछ पर्याप्त न था। लुई-11 एक अच्छा शिकारी था। जानवरों से उसे बहुत लगाव था। उसने घोड़े और कुत्ते मँगाने के लिए सारे यूरोप में अपने प्रतिनिधि भेजे और बाज़ार की क़ीमत से भी ज़्यादा क़ीमत देकर उन्हें ख़रीदा। इस तरह इटली, स्वीडन और जर्मनी से घोड़े और कुत्ते आने शुरू हो गए। उन्हें उसके महल में पहुँचा दिया जाता, लेकिन स्वास्थ्य की कमज़ोरी के कारण उसके लिए यह संभव न था कि वह उन्हें देख भी सके या जो लोग उनको ख़रीदकर लाए हैं, उनसे बात तक भी कर सके, लेकिन उसे इस बात की जानकारी थी कि सारे यूरोप में उसकी इस ख़रीदारी पर चर्चाएँ हो रही हैं।

वह अभी तक जीवित था और अपने स्वास्थ्य को निरोगी रखने का वह इतना ज़्यादा इच्छुक था कि उसने इस बात का आदेश दे रखा था कि मौत का शब्द उसके सामने बोला ही न जाए। उसका अपना ख़ास चिकित्सक उसके पास एक नौकर की तरह काम करता था और राजा का वह पसंदीदा बन गया था। उसे 10,000 स्वर्ण मुद्राएँ हर महीने दी जाने लगी थीं। उस समय पूरे यूरोप के किसी मैदान-ए-जंग में 40 वर्ष काम करके भी एक सैनिक अधिकारी इतनी रक़म नहीं कमा सकता था। अगर कोई आदमी उसके जीवन को एक दिन भी बढ़ा सके तो वह अपना सारा ख़ज़ाना लुटाने को तैयार था। 23 जुलाई, 1483 ई० को जब उसका 60वाँ जन्मदिन निकट आने वाला था, वह और भी चिंतित हो गया। उस समय वह इतना कमज़ोर हो गया था कि अपने मुँह तक निवाला ले जाने में उसे बड़ी कठिनाई होती थी।

उसके मन में एक विचार आया। उसने हज़ारों सोने के सिक्के जर्मनी, रोम और नेपल्स (Naples) के गिरजाघरों और धार्मिक मार्गदर्शकों में बाँटना

शुरू कर दिए। उसने तीन समुद्री जहाज़ देकर अपने बेहतरीन कप्तान को एक द्वीप पर भेजा, ताकि वहाँ से बड़े-बड़े कछुए लाए जाएँ। उसको बताया गया था कि यह समुद्री कछुए जीवन देने वाली विशेषताओं के मालिक हैं।

उसे याद था कि फ़्रांस के राजाओं को उनके राज्याभिषेक (coronation) के समय एक विशेष तरह की क्रीम का तिलक लगाया जाता है। यह एक कहावत है कि यह क्रीम 496 ई० में पुराने ज़माने के एक राजा को एक कबूतर ने दी थी और वह उसकी मौत से कुछ ही दिन पहले एक सुनहरे रथ में पहुँची थी। लुई ने सभी धार्मिक साधनों को, जो संभव था, इस उम्मीद के साथ इकट्ठा किया कि वह ज़्यादा लंबे समय तक जीवित रह सके।

आख़िरकार नेपल्स की एक गुफा से एक जोगी इस उम्मीद के साथ उसके महल में लाया गया कि उसकी प्रार्थना सफल होगी, लेकिन वह बेअसर साबित हुई। फिर भी लुई उसे अपने पास रखने का इतना ज़्यादा इच्छुक था कि उसने अपने वित्त मंत्री (finance minister) को आदेश दे दिया था कि उस जोगी के लिए चाहे सारा ख़ज़ाना क्यों न ख़र्च करना पड़े, अवश्य ख़र्च किया जाए।

इन सभी प्रयासों के बाद राजा लुई पर फ़ालिज का हमला हुआ और 30 अगस्त को वह इस संसार से चल बसा। उसके मुँह से अंतिम शब्द यही निकले — "मैं इतना बीमार तो नहीं हूँ, जितना आप लोग सोचते हैं।"

फ़्रांस की जनता को यह बात अच्छी तरह से याद है कि अप्रैल, 1974 को राष्ट्रपति जॉर्ज पोपेडो ने अपने अंतिम समय में कहा था, जब वह कैंसर के कारण मर रहे थे— "मैं इतना बीमार तो नहीं हूँ, जितना आप लोग सोचते हैं।" और कुछ दिन बाद उसकी मौत हो गई।

आख़िरकार लुई-11 को पता चल गया कि कोई आदमी मौत से जीत नहीं सकता।

# प्रमोशन की ख़बर

अपने आपको संसार में तौलो, इससे पहले
कि तुमको परलोक में तौला जाए।

एक साहब से मुलाक़ात हुई, उन्होंने कहा कि मेरा प्रमोशन हो गया है, अब मुझे ज़्यादा वेतन मिलेगा, रहने को बहुत बड़ा घर मिलेगा, अब मुझे बहुत बड़ी गाड़ी इस्तेमाल के लिए दी जाएगी। पहले मुझे यात्रा के लिए रेलवे का पास मिलता था, अब मुझे यात्रा के लिए हवाई जहाज़ का टिकट मिलेगा इत्यादि।

उसको सुनकर मैंने सोचा कि यही परलोक का मामला भी है। स्वर्ग के मामले द्वारा दुनिया का इसी तरह वर्णन किया जा सकता है, स्वर्ग का मामला भी मानो प्रमोशन का मामला है, जिन लोगों का रिकॉर्ड वर्तमान अस्थायी संसार में अच्छा होगा, उनको प्रमोशन करके परलोक के आदर्श संसार, स्वर्ग में भेज दिया जाएगा।

यह परिस्थिति माँग करती है कि आदमी संसार में बहुत ज़्यादा समझदारी के साथ रहे, वह अपने हर मामले को इसी दृष्टि से जाँचे कि वह स्वर्ग में जाने के लिए रुकावट है या सहायक। इस दृष्टि से जिस आदमी का मन-मस्तिष्क जागरूक हो, वह मानो स्वयं अपना चौकीदार बन जाएगा;वह अपनी सोच, अपनी बातचीत, अपना व्यवहार, यहाँ तक कि अपनी बातों और अपने कर्मों की निगरानी बराबर करता रहेगा, वह हज़रत उमर के इस कथन की मिसाल बन जाएगा— "अपने आपको संसार में तौलो, इससे पहले कि तुमको परलोक में तौला जाए।" (कंज़ुल उम्माल : 44,203)

प्रमोशन की ख़बर की तरह दावत भी एक ख़बर है। अगर किसी आदमी को सत्य का ज्ञान हो जाए तो उसके लिए यह घटना नौकरी में प्रमोशन की ख़बर से अरबों-ख़रबों गुना ज़्यादा बड़ी घटना होगी। ऐसा आदमी यह सहन नहीं कर सकता कि वह अपनी खोज को अपने मन-मस्तिष्क में लिये रहे

और उसकी घोषणा न करे। हक़ीक़त यह है कि सत्य की खोज अपने आप ही किसी आदमी को दाअी बना देती है। अगर कोई आदमी यह दावा करे कि उसने सत्य को पा लिया है, लेकिन इसके बावजूद वह दूसरों को न बताए तो यह मानो इस बात का प्रमाण है कि उसने सत्य को पाया ही नहीं।

## आत्महत्या : सबसे बड़ा पागलपन

इंसान अगर प्रकृति के क़ानून को समझे तो वह बहुत-सी बेवकूफ़ियों से बच जाए, बहुत-सी नामाकियों से उसका कभी सामना न हो।

आत्महत्या सबसे बड़ा पागलपन है, क्योंकि आत्महत्या आदमी उस समय करता है, जबकि वह बहुत बढ़िया ढंग से कोई काम करने की स्थिति में हो जाता है। सच्चाई यह है कि आत्महत्या किसी इंसान के लिए सबसे ज़्यादा कठिन काम है। कोई भी आदमी सामान्य स्थिति में इसके लिए तैयार नहीं होता कि वह अपने आपको स्वयं ही मार डाले। फिर कोई व्यक्ति आत्महत्या जैसा इतना बड़ा काम क्यों करता है।

इसका कारण यह है कि इंसान को जब कोई बड़ा झटका लगता है तो उस समय यह होता है कि प्राकृतिक व्यवस्था के अंतर्गत उसका मस्तिष्क सुरक्षित ऊर्जा (energy) को मुक्त कर देता है। इस कारण उस समय आदमी की शक्ति बहुत बढ़ जाती है। यह बढ़ी हुई शक्ति इसलिए होती है कि आदमी सामने खड़ी समस्या से ज़्यादा शक्ति के साथ मुक़ाबला कर सके, लेकिन वह उस बढ़ी हुई शक्ति का नकारात्मक उपयोग करके आत्महत्या कर लेता है।

यही कारण है कि जो लोग आत्महत्या की कोशिश करें और किसी कारण से मरने से बच जाएँ तो वे अपने बाद के जीवन में ज़्यादा बड़ा काम करने के योग्य हो जाते हैं। आत्महत्या की कोशिश जाने-अनजाने में अपनी सर्वश्रेष्ठ क्षमता से परिचित करा देती है। इसलिए मौत से बचने के बाद वे

इसको भरपूर तौर पर इस्तेमाल करते हैं और ज़्यादा बड़ी सफलता प्राप्त कर लेते हैं। प्रकृति के इस क़ानून का शेख़ सादी ने साधारण रूप से इस तरह वर्णन किया है—

'न बीनी के चूँ गुर्बा आज़िज़ शवद
बर आरद ब चंगाल चश्मे-पलंग'

यानी क्या तूने नहीं देखा कि जब बिल्ली लाचार हो जाती है तो वह शेर की आँख पर हमला कर देती है।

इंसान की ज़्यादातर ग़लतियाँ प्रकृति के क़ानून को न जानने के कारण होती हैं। प्रकृति के क़ानून के अनुसार इंसान के मस्तिष्क में हमेशा सुरक्षित ऊर्जा मौजूद रहती है। जब कोई कठिन समस्या सामने आए तो मस्तिष्क स्वचालित (automatic) रूप से इस सुरक्षित ऊर्जा को मुक्त कर देता है। यह ऐसा ही है, जैसे कि नदी में पानी की कमी के समय बाँध को खोलकर अतिरिक्त पानी जारी कर दिया जाए। सच्चाई यह है कि इंसान अगर प्रकृति के क़ानून को समझे तो वह बहुत-सी बेवक़ूफ़ियों से बच जाए, बहुत-सी नाकामियों से उसका कभी सामना न हो।

## अनंत वीरान

सबसे बड़ी समझदारी यह है कि आदमी
इस आने वाले भयानक दिन की तैयारी करे।

नई दिल्ली के अंग्रेज़ी अख़बार टाइम्स ऑफ़ इंडिया (9 फ़रवरी, 2008) में एक सबक़ देने वाली घटना नज़र से गुज़री। मुंबई के एक अभिनेता आनंद सूर्यवंशी ने अपनी बड़ी मोटरकार गोरेगाँव (मुंबई) में पे एंड पार्क एरिया (pay-and park area) में खड़ी की। कुछ देर बाद जब वे वापस आए तो उनकी कार वहाँ मौजूद न थी, वह चोरी हो चुकी थी। उन्होंने

अख़बार के रिपोर्टर ओलिवेरा को बताया कि इस कार में मेरी सभी निजी चीज़ें मौजूद थीं, जैसे— लैपटॉप, क़ीमती पत्थर की अँगूठी, 30-40 DVDs, लगभग 50 CDs, सूटिंग के कपड़े, मोबाइल फ़ोन और निजी डायरी इत्यादि। आनंद सूर्यवंशी ने कहा कि मैं इन चीज़ों से जज़्बाती तौर पर जुड़ा हुआ था—

'I was emotionally attached to them.'

इस तरह की विस्तृत जानकारी देते हुए उन्होंने दुख भरे स्वर में कहा— "इस हादसे के बाद मुझे ऐसा महसूस होता है, जैसे कि मैं अचानक किसी वीरान द्वीप में आकर फँस गया हूँ।"

'I feel like I am stranded on some lonely island.' (p. 4)

यही मामला ज़्यादा बड़े पैमाने पर परलोक में सामने आएगा। मौत से पहले के जीवन में आदमी हर तरह के साज़ो-सामान में जीता है— मकान, गाड़ी, औलाद, व्यापार-व्यवसाय, पहचान-प्रसिद्धि, बैंक बैलेंस इत्यादि। मौत के बाद के जीवन में आदमी अचानक अपने आपको एक नए संसार में पाएगा। यहाँ वह पूरी तरह से अकेला होगा। उसके सभी सांसारिक सामान उससे छूट चुके होंगे। उसके पीछे वह संसार होगा, जिसको वह हमेशा के लिए छोड़ चुका। उसके आगे वह संसार होगा, जहाँ उसके लिए हमेशा वीरान के सिवा और कुछ नहीं। मौत से पहले आदमी इस आने वाले दिन के बारे में सोच नहीं पाता। मौत के बाद अचानक यह दिन आ जाएगा। उस समय इंसान सोचेगा, लेकिन उसका सोचना उसके काम न आएगा। सबसे बड़ी समझदारी यह है कि आदमी इस आने वाले भयानक दिन की तैयारी करे।

# मरने वालों की चर्चा

मौत का अर्थ यह है कि आदमी ने अपने जीवन के पहले अवसर को खो दिया और जहाँ तक दूसरे अवसर का सवाल है, वह कभी किसी को मिलने वाला नहीं।

यह एक आम रिवाज है कि जब कोई आदमी मरता है तो उसके बारे में पत्रिकाओं और अख़बारों में लेख प्रकाशित किए जाते हैं, उसकी याद में प्रशंसात्मक लेख छपते हैं, उसकी याद में शानदार सभाएँ की जाती हैं। इन सब में यह होता है कि मरने वाले के कारनामों और उसकी महानताओं का वर्णन किया जाता है । यह तरीक़ा भटकाने (misleading) का एक बड़ा माध्यम है।

किसी की मौत पर जो वास्तविक घटना घटित होती है, वह यह है कि मरने वाला अपनी महानता की सभी निशानियों को अचानक छोड़ देता है। मौत उसको एक ऐसे संसार में पहुँचा देती है, जहाँ वह पूरी तरह से अकेला और बिना साधन और बिना सामान का होता है। वर्तमान की दृष्टि से मरने वाले की वास्तविक स्थिति यही होती है, लेकिन सारे लिखने और बोलने वाले मरने वाले के वर्तमान की कोई चर्चा नहीं करते, वे केवल उसके अतीत को लेकर उसकी सांसारिक प्रशंसा का गुणगान करते हैं, हालाँकि मरने वाला व्यावहारिक रूप से अपने इस अतीत से पूरी तरह से कट चुका होता है।

मौत की असल हैसियत यह है कि वह किसी इंसान के लिए संपूर्ण अलगाव (total detachment) के समान होती है। मौत का अर्थ यह है कि आदमी ने अपने जीवन के पहले अवसर (first chance) को खो दिया और जहाँ तक दूसरे अवसर (second chance) का सवाल है, वह कभी किसी को मिलने वाला नहीं। हर मरने वाला वास्तव में जीवन के इस गंभीर पहलू को याद दिलाता है, लेकिन यही वह पहलू है जिसका वर्णन न लेखों में किया जाता है और न ही भाषणों में।

मरने वाले की ख़ूबी और श्रेष्ठता को पढ़कर या सुनकर प्रत्यक्ष रूप से ऐसा लगता है कि वह आज भी उन्हीं ख़ूबियों का मालिक है, हालाँकि ऐसा बिल्कुल नहीं। वक्ता और लेखक जिस इंसान के बारे में यह बताते हैं कि वह एक ऐतिहासिक इंसान था, बहुत संभव है कि उस समय स्वयं मरने वाले का हाल यह हो कि वह एक ऐतिहासिक इंसान न हो और पछतावे व बेबसी के संसार में पड़ा हो।

# आकर्षक धोखा

इस संसार में सफलता के लिए आवश्यक है कि आदमी लुभावनी बातों से प्रभावित न हो, वह स्पष्ट सच्चाई की रोशनी में अपनी राय बनाए।

हर भाषा में कहावतें होती हैं। ये कहावतें इंसान के जीवन का अनुभव होती हैं। हर कहावत लंबे इंसानी अनुभव के बाद बनती है। इसी तरह की एक अंग्रेज़ी कहावत यह है—

'यह इतना ज़्यादा अच्छा है कि वह सच नहीं हो सकता'

'It is too good to be true.'

यह एक सच्चाई है कि सच के मुकाबले में झूठ हमेशा लुभावना होता है। वास्तविक लाभों की तुलना में झूठे लाभ हमेशा ज़्यादा दिखाई देते हैं। ईमानदारी वाली बात की तुलना में पाखंडी बात हमेशा लुभावनी लगती है। सुझाव और सीख की तुलना में ख़ुश करने वाली बात सुनने में ज़्यादा अच्छी लगती है। वास्तविक इतिहास की तुलना में काल्पनिक कहानियाँ ज़्यादा दिलचस्प होती हैं। सच्चाई को प्रकट करने वाली बात की तुलना में रोमांटिक बातें हमेशा ज़्यादा आकर्षक नज़र आती हैं। उपयोगी बात की तुलना में बेकार बात आदमी को ज़्यादा मनमोहक लगती है।

यही वह चीज़ है, जो आदमी को धोखे में डाल देती है। ऐसी स्थिति में

आदमी हर समय परीक्षा की स्थिति में है। हर समय उसको चौकन्ना बनकर रहना है, ताकि ऐसा न हो कि वह झूठ के फ़रेब में फँसकर सच्चाई से दूर हो जाए। वह हवाई बातों से मंत्रमुग्ध (spellbound) होकर सत्य को स्वीकार करने के रास्ते से हट जाए। वह फ़रेबी बातों के धोखे में आकर सही बात को स्वीकार न कर सके।

इस संसार में हर समय यह ख़तरा है कि आदमी सोने की परत को सोना समझकर ले ले और फिर वह भारी नुक़सान में फँस जाए। वह झूठे शब्दों के धोखे में आकर ऐसी छलाँग लगा दे, जो उसको ऐसे गड्ढे में गिरा दे, जिससे निकलने का कोई उपाय उसके लिए न हो ।

इस संसार में सफलता के लिए आवश्यक है कि आदमी लुभावनी बातों से प्रभावित न हो, वह स्पष्ट सच्चाई की रोशनी में अपनी राय बनाए। समझदार इंसान केवल वह है, जो इस कसौटी पर पूरा उतरे।

# मौत का मसला

लोग इंसानों की ओर की जाने वाली बातों को महत्व देते हैं, हालाँकि सच्चाई की माँग है कि ईश्वर की बातों को सबसे ज़्यादा महत्व दिया जाए।

19 नवंबर, 1994 को दिल्ली के लगभग सभी अख़बारों के मुख्य पृष्ठ की प्रमुख ख़बर यह थी कि जनरल बिपिन चंद्र जोशी की दिल्ली में दिल की धड़कन बंद होने से मृत्यु हो गई। उनकी आयु अभी केवल 59 वर्ष थी। मृत्यु के समय वे आर्मी चीफ़ के पद पर थे। लंबी सेवा के बाद अब वे अपनी अंतिम प्रमोशन के दौर में पहुँचे थे और उस समय सीनियर मोस्ट सर्विस चीफ़ की हैसियत रखते थे।

18 नवंबर को गोल्फ़ खेलने के बाद उन्होने सीने में दर्द बताया। थोड़ी देर बाद वे बेहोश हो गए। उन्हें तुरंत बेहतरीन मेडिकल सहायता पहुँचाई

गई, लेकिन वे दोबारा होश में न आ सके। बेहोशी की हालत में ही उनकी मौत हो गई।

जनरल जोशी के विषय में बताया गया है कि उन्हें भूतपूर्व सैनिकों का बहुत ध्यान रहता था। हिंदुस्तान में एक सैनिक 35 वर्ष की आयु में रिटायर होता है और अधिकारी 48 वर्ष की आयु में। इस तरह हर वर्ष फ़ौज से सत्तर हज़ार आदमी रिटायर होते हैं। उनको इन रिटायर होने वालों की बेहतरी की बहुत चिंता रहती थी। उनका कहना था कि आज का सिपाही कल का भूतपूर्व सैनिक है।

'Today's soldier is tomorrow's ex-serviceman.'

जनरल जोशी अगर और दूर तक देख सकते तो कहते कि आज का सैनिक और भूतपूर्व सैनिक दोनों ही कल की दृष्टि से परलोक के वासी हैं। दोनों ही को मौत के बाद परलोक की कसौटी पर पूरा उतरना है। इसके बाद ही यह निर्णय होगा कि कौन कैसा था और कौन कैसा। कौन भाग्यशाली था और कौन दुर्भाग्यशाली । कौन सफल था और कौन विफल। लोग मौत से पहले के जीवन में उलझे रहते हैं, हालाँकि समझदारी यह है कि आदमी मौत के बाद के जीवन की समस्याओं पर सबसे ज़्यादा चिंता करे। लोग इंसानों की ओर की जाने वाली बातों को महत्व देते हैं, हालाँकि सच्चाई की माँग है कि ईश्वर की बातों को सबसे ज़्यादा महत्व दिया जाए। लोग संसार के क़ानून की पकड़ से बचने का उपाय करते हैं, हालाँकि इससे ज़्यादा उन्हें इस बात का उपाय करना चाहिए कि कहीं वे ईश्वर की पकड़ में न आ जाएँ।

# मौत की दुखद घटना

मौत से असावधानी (unawareness) ही आदमी को एक लापरवाह इंसान बना देती है। इसके विपरीत मौत की याद आदमी को चरम सीमा तक एक जागरूक और सावधान इंसान बना देती है।

मौत हर औरत और आदमी पर अनिवार्य रूप से आती है। मौत का सबसे ज़्यादा दुखद पहलू यह है कि मौत के बाद दोबारा वर्तमान संसार में वापसी संभव नहीं। मौत के बाद इंसान को हमेशा के लिए एक नए संसार में रहना है। मौत के बाद केवल भुगतना है, कर्म करना नहीं है।

इंसान एक बेहद संवेदनशील (sensitive) प्राणी है। इंसान किसी कठोरता को सहन नहीं कर पाता, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो। हर औरत और हर आदमी को सबसे ज़्यादा यह सोचना चाहिए कि मौत के बाद अगर उसको कठिन परिस्थितियों में रहना पड़ा तो वह कैसे उनको सहन करेगा। अगर इंसान यह सोचे तो उसके जीवन में एक क्रांति पैदा हो जाए।

क़ुरआन में बताया गया है कि स्वर्ग वाले जब स्वर्ग में प्रवेश करेंगे तो वे कहेंगे : 'शुक्र है ईश्वर का, जिसने हमसे दुख को दूर कर दिया' (35:34) कष्ट का जीवन इंसान के लिए सबसे ज़्यादा असहनीय जीवन है और कष्ट से मुक्त जीवन इंसान का सबसे बड़ा उद्देश्य है। इंसान अगर इस पहलू को समझे तो मौत उसका सबसे बड़ा कंसर्न (concern) बन जाए। वह मौत के बारे में इससे ज़्यादा सोचेगा, जितना वह जीवन के बारे में सोचता है।

मौत का विचार आदमी के लिए मास्टर स्ट्रोक की तरह है। मास्टर स्ट्रोक कैरम बोर्ड की सभी गोटियों को अपनी जगह से हिला देता है। इसी तरह अगर आदमी के अंदर मौत की सोच जीवित हो तो उसके मस्तिष्क के सभी हिस्से हिल जाएँ। उसका सोचना और उसका चाहना पूरी तरह से बदल जाए। उसके जीवन में एक ऐसी क्रांति आएगी, जो उसको एक नया इंसान बना देगी। मौत से असावधानी (unawareness) ही आदमी को एक लापरवाह

इंसान बना देती है। इसके विपरीत मौत की याद आदमी को चरम सीमा तक एक जागरूक और सावधान इंसान बना देती है।

## मौत का संदेश

यह बात कोई आदमी नहीं जानता कि मौत के बाद वाले जीवनकाल के लिए उसको क्या तैयारी करनी चाहिए।

इंडिया के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० अब्दुल कलाम की 27 जुलाई, 2015 को मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय उनकी आयु 83 वर्ष थी। वे नई दिल्ली से हवाई यात्रा करके शिलांग गए, ताकि वहाँ वे विज्ञान के विषय पर भाषण दे सकें। वहाँ वे अपना भाषण दे रहे थे कि उन्हें दिल का दौरा पड़ा। वे मंच पर गिर पड़े। उनको तुरंत अस्पताल ले जाया गया। वहाँ डॉक्टर ने घोषणा की कि डॉ० कलाम की मृत्यु हो चुकी है।

मौत एक ऐसी घटना है, जो हर इंसान के जीवन में घटित होती है। हर इंसान के जीवन में यह पल आता है कि मौत का फ़रिश्ता अचानक उसके पास आता है और कहता है— "ऐ इंसान ! तुमको इस संसार में वर्ष '83' वर्ष जीना था। यह अवधि पूरी हो चुकी। अब तुमको एक और संसार में जीवन बिताना है, जहाँ तुम हमेशा रहोगे। '83' वर्ष पर तुम्हारे जीवन का एक दौर ख़त्म हो चुका और अब तुम्हारे जीवन का दूसरा दौर शुरू होता है, जो कभी ख़त्म न होगा।

हर इंसान को यह पता है कि मौत से पहले के जीवनकाल में उसको अपनी सफलता के लिए क्या करना है, लेकिन यह बात कोई आदमी नहीं जानता कि मौत के बाद वाले जीवनकाल के लिए उसको क्या तैयारी करनी चाहिए, जो वहाँ के स्थायी जीवन में उसके काम आए। यही इंसान की सबसे बड़ी समस्या है, लेकिन अजीब बात है कि यही वह समस्या है जिससे हर

इंसान अनजान है। वह सांसारिक नाकामियों से बचने के लिए तो सब कुछ करता है, लेकिन परलोक की नाकामी से बचने के लिए वह कुछ नहीं करता। कभी अनजाने में और कभी जानने के बावजूद।

## मौत की घटना

जो आदमी मौत से असावधान हो, वह
वर्तमान संसार को ही सब कुछ समझने लगता है।

यह बात कोई आदमी नहीं जानता कि मौत के बाद के जीवनकाल के लिए उसको क्या तैयारी करनी चाहिए, पैग़ंबरे-इस्लाम हज़रत मुहम्मद ने कहा— मौत को बहुत ज़्यादा याद करो, जो लज़्ज़तों को ढह देने वाली है।

(सुनन इब्न माजा, हदीस नं० 4,258)

इसे इन शब्दों में समझाया गया है कि मौत संसार की लज़्ज़तों से आदमी को पूरी तरह से काट देती है। इस हदीस में लज़्ज़तो का अर्थ सांसारिक इच्छाएँ (worldly aspirations) हैं। यहाँ जिस चीज़ को 'लज़्ज़तों को ढह देने वाली' कहा गया है, उसको दूसरे शब्दों में इस तरह कहा जा सकता है कि आदमी के अंदर अगर मौत की जीवित सोच हो तो उसका परिणाम यह होगा कि आदमी का सांसारिक लगाव (worldly attachment) समाप्त हो जाएगा। वह मौत से पहले के जीवन की तुलना में मौत के बाद के जीवन को ज़्यादा महत्वपूर्ण समझेगा। इसके बाद उसकी सोच पूरी तरह से परलोकमुखी सोच (hereafter oriented thinking) बन जाएगी। इस सोच का असर यह होगा कि आदमी की उमंगें, आदमी की दौड़-भाग, आदमी के काम करने का ढंग, सब परलोकमुखी हो जाएगा।

जो आदमी मौत से सावधान न हो, वह वर्तमान संसार को ही सब कुछ समझने लगता है, उसके मन-मस्तिष्क पर वर्तमान संसार की हानि और लाभ

छाया रहता है। वह एक सांसारिक इंसान बन जाता है।

लेकिन मौत एक ऐसी सच्चाई है, जिसकी जागरूकता अगर आदमी के अंदर पैदा हो जाए तो उसके बाद उसके जीवन में एक क्रांति आ जाए। अब वह सबसे ज़्यादा उस दिन के बारे में सोचेगा, जबकि लोग संपूर्ण सृष्टि के रचयिता के सामने खड़े किए जाएँगे (अल-मुतफ़्फ़िफ़ीन, 6)। अब उसको सबसे ज़्यादा इस बात की चिंता हो जाएगी कि वह परलोक में ईश्वर की पकड़ से किस तरह बच जाए। वह सबसे ज़्यादा नरक से डरेगा और सबसे ज़्यादा स्वर्ग का अभिलाषी बन जाएगा। लज़्ज़त और कड़वाहट के प्रति उसके विचार बदल जाएँगे। उसके सोचने का तरीक़ा और उसका व्यावहारिक रवैया, हर चीज़ में परलोक का असर दिखाई देने लगेगा।

# मौत की अवधारणा

मौत की अवधारणा आदमी को यह बताती है कि तुम्हारे ऊपर एक ऐसा दिन आने वाला है, जो अचानक तुम्हारा सब कुछ बदल देगा।

एक हदीस में मौत को लज़्ज़तों को ढह देने वाली (सुनन इब्न माजा, हदीस नंबर 4,258) कहा गया है यानी कोई इंसान अगर अपनी मौत को याद करे तो यह याद उसके लिए लज़्ज़तों को ढह देने वाली बन जाएगी। उसके लिए फिर कोई लज़्ज़त, लज़्ज़त नहीं रहेगी। जिन दुनियावी चीज़ों को लेकर लोग ख़ुश होते हैं, वह चीज़ें उसको ख़ुशी न दे सकेंगी।

मौत की अवधारणा आदमी को यह बताती है कि तुम्हारे ऊपर एक ऐसा दिन आने वाला है, जो अचानक तुम्हारा सब कुछ बदल देगा। तुम अपने बनाए हुए घर में होगे, तुम अपने बच्चों के बीच ख़ुश होगे, तुम अपने दोस्तों के बीच या अपने रोज़गार के बीच होगे या और किसी हाल में होगे, उस समय अचानक मौत का फ़रिश्ता आएगा, वह तुम्हारे शरीर को छिलके

की तरह फेंक देगा और तुम्हारे मूल अस्तित्व को लेकर एक दूसरे संसार में चला जाएगा। तुम्हारे जानने वाले कुछ न जानेंगे कि तुम कहाँ चले गए।

मौत की यह अवधारणा आदमी को बहुत ज़्यादा गंभीर बना देती है। आदमी की सबसे बड़ी सोच यह बन जाती है कि मैं क्या हूँ और मेरा भविष्य क्या है? मेरा जीवन क्या है और मेरी मौत क्या है? मौत से पहले के जीवनकाल में मुझे क्या करना है? मौत के बाद के जीवनकाल में मेरे साथ क्या घटना घटने वाली है?

मौत की याद आदमी को इस योग्य बना देती है कि वह जीवन के मामले में बहुत ज़्यादा गंभीर हो जाए, वह हर पल अपने जीवन की जाँच करने लगे। मौत अटल अंदाज़ में इंसान को बताती है कि प्रत्यक्षतः भले ही तुम्हारा वर्तमान तुम्हारे नियंत्रण में है, लेकिन तुम्हारा भविष्य बिल्कुल भी तुम्हारे नियंत्रण में नहीं। मौत आदमी को इस योग्य बनाती है कि वह अपने वर्तमान से ज़्यादा अपने भविष्य के बारे चिंतित हो जाए। वह मौत से पहले के जीवनकाल के निर्माण के बजाय मौत के बाद के जीवनकाल में व्यस्त हो जाए।

## लज़्ज़तों को ढह देने वाली

मौत की याद आदमी को नकारात्मक (negative) कार्रवाई से हटाकर सकारात्मक (positive) कार्रवाई में व्यस्त कर देती है।

एक हदीस का वर्णन इन शब्दों में है — "मौत को बहुत ज़्यादा याद करो, जो लज़्ज़तों को ढह देने वाली है।" (सुनन इब्न माजा, हदीस नंबर 4,258)

इसका अर्थ यह है कि आदमी अगर मौत की सच्चाई को पूरी गंभीरता के साथ याद करे तो उसके जीवन का ध्यान-केन्द्र बदल जाएगा। उसका जीवन संसारमुखी (worldly) जीवन नहीं रहेगा, बल्कि परलोकमुखी जीवन बन जाएगा।

जब एक व्यक्ति सांसारिक तरीक़ा अपनाता है तो हर समय संसार कमाने में लगा रहता है। ऐसा इसलिए संभव होता है कि उसको व्यस्त रहने में एक लज़्ज़त मिलती है। वह व्यस्त रहने में अपने लिए एक शानदार सांसारिक भविष्य की संभावना को देखता है, लेकिन अगर उसको ज्ञात हो कि उस पर एक ऐसा दिन आने वाला है, जबकि वह अपनी सारी कमाई छोड़कर इस संसार से चला जाएगा तो उसके लिए अपने व्यस्त होने में कोई रुचि शेष नहीं रहेगी। यह उसके अंदर एक नई सोच जागरूक करने का माध्यम बन जाएगी। वह सोचेगा कि अगर मेरी कमाई मौत के बाद मेरे साथ जाने वाली नहीं है तो मुझे अपनी गतिविधियों की दिशा बदल लेनी चाहिए।

इस तरह अगर कोई आदमी किसी से नाराज़ हो जाए और वह उसके ख़िलाफ़ बदला लेने की कार्रवाई की योजना बनाए तो मौत की याद उसके जीवन की दिशा बदल देगी। वह सोचेगा कि जब मेरा बदला हमेशा के लिए किसी का कुछ बिगाड़ने वाला नहीं तो मैं क्यों बदले की कार्रवाई में अपना समय बरबाद करूँ।

सच्चाई यह है कि मौत की याद आदमी के लिए याद दिलाने (reminder) का माध्यम है। मौत की याद उसके कर्मों का सुधार करने वाली है। मौत की याद आदमी को नकारात्मक (negative) कार्रवाई से हटाकर सकारात्मक (positive) कार्रवाई में व्यस्त कर देती है। मौत की याद आदमी को गंभीर और सच्चाई को मानने वाला बनाती है। मौत आदमी को याद दिलाती है कि वह अनिवार्य रूप से एक दिन इंसान के संसार से निकलकर ईश्वर के संसार में जाने वाला है, यह सोच आदमी के लिए 'अपना सुधार आप' (self-correction) का माध्यम है।

# मौत की सीख

इस्लाम यह चाहता है कि जीवित लोग मरने वाले के रूप में स्वयं अपने आपको देखें। वे मौत से पहले मौत का अनुभव करें।

मैं एक जनाज़े (funeral) में शामिल हुआ। मौत के बाद मरने वाले व्यक्ति को स्नान कराया गया। उसको नए कपड़े का कफ़न पहनाया गया। लोगों ने खड़े होकर उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ी और फिर वे मय्यत (अर्थी) को अपने कंधों पर लेकर चले, यहाँ तक कि क़ब्र में सम्मान के साथ लिटाकर उसको ढक दिया गया।

मैंने सोचा कि एक बेजान शरीर के साथ इतने ज़्यादा रीति-रिवाज का आदेश इस्लाम ने क्यों दिया। यह एक सच्चाई है कि मरने के बाद इंसान का शरीर मिट्टी के सिवा और कुछ नहीं होता, लेकिन उसको साधारण मिट्टी की तरह इधर-उधर फेंक नहीं दिया जाता, बल्कि उसके साथ विधिपूर्वक इंसान जैसा व्यवहार किया जाता है। 'मिट्टी' के साथ 'इंसान' जैसा मामला करने का आदेश मरने वाले की दृष्टि से नहीं है, बल्कि जीवित रहने वाले की दृष्टि से है।

निर्जीव इंसान के माध्यम से जीवित इंसानों को यह सीख दी जाती है कि आख़िरकार उनका परिणाम क्या होने वाला है। इस्लाम यह चाहता है कि जीवित लोग मरने वाले के रूप में स्वयं अपने आपको देखें। वे मौत से पहले मौत का अनुभव करें। यह अनुभव इस तरह भी संभव था कि एक निर्धारित दिन काग़ज़ का एक इंसानी पुतला बनाया जाए और उसके साथ सभी रस्मों को पूरा करके उसको मिट्टी के गड्ढे में डाल दिया जाए। इस्लाम ने इस अनुभव को वास्तविक बनाने के लिए असली इंसान के निर्जीव शरीर को इस्तेमाल किया।

एक इंसान हमारी तरह एक जीवित इंसान था। चलते-चलते उसके क़दम जवाब दे गए। बोलते-बोलते उसकी ज़बान बंद हो गई। देखते-देखते

उसकी आँखें बेजान हो गईं। लोगों के निकट उसकी जो क़ीमत थी, वह सब अचानक ख़त्म हो गई। अब ईश्वर इस घटना को इस्तेमाल करता है, ताकि वह इंसानों को उसी के जैसे एक इंसान के माध्यम से जीवन की शिक्षा याद दिलाए।

लोग उसको पूरी आदर के साथ तैयार करते हैं और फिर लेकर चलते हैं। यहाँ तक कि अंतिम चरण में पहुँचकर जब उसको क़ब्र के गड्ढे में लिटा दिया जाता है तो हर आदमी यह करता है कि तीन बार अपने हाथ में मिट्टी लेकर क़ब्र में डालता है।

पहली बार मिट्टी डालते हुए वह क़ुरान के यह श्लोक कहता है—
'मिन्हा ख़लक ना कुम'—इसी से हमने तुमको पैदा किया था

जब वह दूसरी बार मिट्टी डालता है तो कहता है—
'व फ़ी हा नू ईदू कुम' —इसी में हम तुमको दोबारा डाल रहे हैं

और फिर तीसरी बार मिट्टी डालते हुए वह कहता है—
'व मिन्हा नुख़्रिजुकुम तारतन उख़्रा —और इसी से हम तुमको दोबारा निकालेंगे' (सूरह ताहा, 55)

यह तीन बार मिट्टी डालना इस पूरे मामले की चरम सीमा (climax) है। इस तरह एक जीवित घटना के माध्यम से यह बताया जाता है कि इंसान क्या है और उसका अंतिम परिणाम क्या है।

## अपने जनाज़े की नमाज़

जो आदमी इतना ज़्यादा लापरवाह हो कि दूसरे की मौत देखकर भी उसको अपनी मौत याद न आए, वह एक तरह से कठोर पत्थर है।

दिल्ली में एक मुसलमान की मौत हुई। जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने के बाद उनको एक स्थानीय क़ब्रिस्तान में दफ़न किया गया। मेरे एक साथी

ने बताया कि वह उस नमाज़ में शामिल थे। नमाज़ शुरू होने वाली थी तो उनके पास खड़े हुए एक मुसलमान ने पूछा– फ़र्ज़ (obligatory) नमाज़ की नीयत करूँ या सुन्नत (voluntary) की नीयत करूँ। उन्होंने कहा कि स्वयं अपने जनाज़े की नमाज़ की नीयत करो। उस आदमी को हैरानी हुई। बाद में उन्होंने उस आदमी से कहा कि किसी के मरने पर जनाज़े की नमाज़ पढ़ना केवल एक रस्म नहीं, वह एक बहुत बड़ी सच्चाई को याद दिलाना है।

यह सच्चाई है कि मरने वाले की जिस तरह मौत हुई है, उसी तरह मेरी भी मौत होने वाली है। सामूहिक रूप से जनाज़े की नमाज़ वास्तव में इसी सच्चाई को याद करने के लिए है। सच्चाई यह है कि जनाज़े की सच्ची नमाज़ उसी इंसान की है, जो दूसरे की मौत में अपनी मौत को याद करे। वह सोचे कि आज जो कुछ मरने वाले के साथ घटित हुआ है, वही स्वयं मेरे साथ घटित होने वाला है। मौत को देखकर जो आदमी इस तरह सोचे,और वह जब जनाज़े की नमाज़ के लिए खड़ा होगा तो उसे यह अनुभव होगा कि मैं स्वयं अपने जनाज़े की नमाज़ पढ़ रहा हूँ। जो कुछ दूसरे के साथ आज घटित हुआ है, वही मेरे साथ कल घटित होने वाला है।

मौत किसी एक इंसान का मामला नहीं, मौत की घटना हर औरत और हर आदमी पर अनिवार्य रूप से घटित होने वाली है। बड़ी बात यह कि मौत किसी से पूछकर नहीं आती, मौत अचानक आ जाती है और मौत जब आ जाती है तो कोई भी इंसान उसको वापस करने पर समर्थ नहीं होता।

मौत एक अटल सच्चाई है, एक इंसान के लिए भी और दूसरे इंसान के लिए भी। आदमी को चाहिए कि वह हर पल अपनी मौत को याद करे, जो आदमी इतना ज़्यादा लापरवाह हो कि दूसरे की मौत को देखकर भी उसको अपनी मौत याद न आए, वह एक तरह से कठोर पत्थर है। वह देखने पर इंसान दिखाई देता है, लेकिन वह इंसानी गुणों से उसी तरह ख़ाली है, जिस तरह पत्थर की कोई मूर्ति इंसानी गुणों से ख़ाली होती है। मौत को याद करना

संवेदनशील (sensitive) इंसान की विशेषता है और मौत को याद न करना असंवेदनशील (insensitive) इंसान का गुण है।

## जाने-माने अरबपति

हॉवर्ड रोबार्ड ह्यूज (Howard Robard Hughes) अमेरिका का एक जाना-माना अरबपति था। अप्रैल, 1976 में एक हवाई यात्रा के समय उसे दिल का दौरा पड़ा। उसके हवाई जहाज़ को तुरंत ह्यूस्टन में उतारा गया, लेकिन अस्पताल पहुँचने से पहले उसकी मौत हो चुकी थी।

अपने वकील पिता से उसे एक मिलियन डॉलर विरासत के रूप में मिले थे, लेकिन उसने अपनी असाधारण व्यापारिक योग्यता से अपनी पूँजी को 20 हज़ार करोड़ डॉलर से भी ज़्यादा बढ़ा लिया। उसके हवाई जहाज़ के कर्मचारी, जो उसके साथ यात्रा में थे, उन्होंने उसके अंतिम क्षणों के बारे में जिन आँखों देखे हालात का वर्णन किया, उसकी बुनियाद पर प्रसिद्ध अमेरिकी आर्टिस्ट शरल सॉलोमन ने उसकी रूपरेखा तैयार की है। उस रूपरेखा में उसकी जीवन-यात्रा के अंतिम क्षणों को दर्शाया गया है, अमेरिका का सफल व्यापारी उस रूपरेखा में भय, निराशा, लाचारी, नाकामी और अविश्वास की प्रतिमा दिखाई देता है।

अमेरिकी व्यापारी की यह डरावनी तस्वीर उस आंतरिक स्थिति को साकार कर रही है, जो एक आदमी की उस समय होती है, जब वह मौत के दरवाज़े पर पहुँच चुका हो, उसके पीछे वह जीवन हो जिसे वह छोड़ चुका और आगे वह जीवन हो, जिसमें अब वह हमेशा के लिए चला जाएगा।

# मौत की याद

इंसान के लिए हक़ीक़त पर आधारित योजनाबंदी यह है कि वह मौत से पहले के जीवनकाल में भौतिक चीज़ों के मामले में केवल ज़रूरत पर संतोष करे और अपने समय और अपनी क्षमताओं का बड़ा हिस्सा इस पर ख़र्च करे कि वह मौत के बाद के जीवन में एक विशुद्ध व्यक्तित्व (purified personality) के साथ प्रवेश करे, ताकि उसको स्थायी जीवनकाल के आदर्श संसार (perfect world) में सम्मान और राहतपूर्ण जीवन मिल सके।

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान 'सेंटर फॉर पीस एंड स्प्रिचुएलिटी', नई दिल्ली के संस्थापक हैं। मौलाना का मानना है कि शांति और आध्यात्मिकता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं : आध्यात्मिकता शांति की आंतरिक संतुष्टि है और शांति आध्यात्मिकता की बाहरी अभिव्यक्ति। विश्व-शांति में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त है।

CPS International
centre for peace & spirituality
www.cpsglobal.org

Goodword
www.goodwordbooks.com